अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

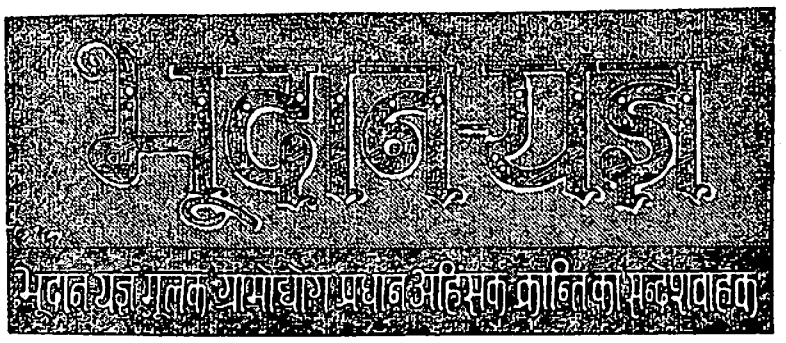

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञमूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक

सौर आषाढ़, २८ शक १८७९ — सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार

वार्षिक मूल्य ६) — एक प्रति २ आना

…मैं तो कहूँगा कि यदि गाँव नष्ट होता है, तो भारत भी नष्ट होकर रहेगा। ऐसी हालत में भारत असली भारत नहीं रह जायेगा, दुनिया में वह अपना दायित्व नहीं निभा सकेगा। गाँवों का पुनरुद्धार उसी हालत में सम्भव है, जब उनका तनिक भी शोषण न हो। बड़े पैमाने के औद्योगीकरण के कारण जब प्रतिस्पर्धा और बाजार की समस्याएँ उत्पन्न होंगी, उस हालत में निश्चय ही ग्रामीणों का सक्रिय अथवा निष्क्रिय असहयोग होकर रहेगा। इसलिए हमारे सारे प्रयत्न ग्रामों को इस तरह आत्म-निर्भर बनाने पर केंद्रित होने चाहिए, जिससे कि वे मुख्यतः उपयोग के लिए उत्पादन करें। अगर ग्रामोद्योग की यह विशेषता सुरक्षित रहे, तो ग्रामीणों द्वारा ऐसे आधुनिक यंत्रों और औजारों के प्रयोग पर कोई एतराज नहीं होना चाहिए, जिन्हें वे स्वयं बना सकते हों और जिनका प्रयोग करने में वे समर्थ हों। एतराज केवल यही है कि यंत्रों का प्रयोग दूसरों के शोषण के लिए न हो।

('हरिजन', २९-८-३६) —गांधीजी

वर्ष-३, अंक-४२ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १९ जुलाई, '५७

भूदान और सरकारी तरीके का अंतर

प्रश्न : भूदान जिस गति से आज प्रगति कर रहा है, उससे क्या आपको समाधान है? अगर समाधान नहीं है, तो आंदोलन में क्या दोष है? यह भी हो सकता है कि आप बहुत आगे की बात सोचते होंगे, जो आज होना मुश्किल है!

विनोबा : हम बिलकुल इस जमाने की बात कर रहे हैं और इसकी आज ही जरूरत है। जो कार्य हुआ है, उससे भी मुझे संतोष है। ४२ लाख एकड़ जमीन मिली है और ढाई हजार ग्रामदान हुए हैं। इस प्रकार का कार्य इतिहास में नहीं दीखता। परंतु कुछ असंतोष भी है, क्योंकि हिंदुस्तान का सवाल बड़ा है और बहुत सारे कार्यकर्ता राजनैतिक पक्ष में छिप गये हैं। सबको बड़ा भ्रम है कि सत्ता हासिल करेंगे और उस सत्ता के जरिये सेवा हो सकती है तथा जो भी सेवा करनी हो, वह सरकार करेगी। इस कारण जन-सेवा के लिए, जनशक्ति प्रगट करने के लिए जितने कार्यकर्ता दौड़े आने चाहियें, उतने नहीं आते। सहानुभूति तो वे बताते हैं, परंतु प्रत्यक्ष काम में नहीं आते। सोचते यही कि सत्ता हाथ में आनी चाहिये। जब सत्ता नहीं मिलती, तो दूसरों के दोष निकालते रहते हैं या फिर घर में बैठे रहते हैं। कारण यह है कि उनमें विश्वास की कमी है। उनका विश्वास सत्ता पर है, परंतु सत्ता एक बात है और जनशक्ति दूसरी। दो हाथों से ही तो ताली बजती है न? वैसे ही सरकार और जनशक्ति एक होगी, तभी तो सेवा हो सकेगी!

प्रश्न : सरकार की जो योजना है, उससे क्या आपको संतोष है? अगर नहीं है, तो आपके क्या सुझाव हैं?

विनोबा : जो प्लानिंग आज हुआ है, उससे बाबा के प्लानिंग का ढंग दूसरा ही है। उनका ढंग नैशनलाइज्ड प्लानिंग का है और दिल्ली में योजना बनती है, सारे हिंदुस्तान की। बाबा चाहता है, गांव-गांव में योजना बने। गांव वाले ही योजना बनायेंगे और अपनी जमीन भी बाँट लेंगे। दो साल का अनाज वे गाँव में रखेंगे। क्या-क्या धंधे खड़े करने हैं, यह गांववाले सोचेंगे। गांववाले कहें कि गांव की योजना हम बनायेंगे। गाँववाले ही ग्रामसभा बनायेंगे। फिर ऐसे गांवों को जोड़ने वाली सेंट्रल गवर्नमेंट है। यह है बाबा का विचार। आज जैसा चल रहा है, उससे यह भिन्न है। इसलिए हमने ग्रामदान चलाया है। इसमें सारी जमीन गाँव की होगी और ग्राम अपनी योजना करेगा। जो मदद देनी है, वह सरकार दे सकती है, परंतु गांववाले अपनी शक्ति से ही काम करेंगे।

प्रश्न : केरल की सरकार जो नैशनलाईजेशन करना चाहती है, लोकशाही के ख्याल से, केंद्र सरकार को उससे सहमत होना चाहिए या नहीं?

विनोबा : यह सवाल हमसे नहीं पूछना चाहिये, क्योंकि न हम यहाँ की सरकार में हैं, न केंद्र-सरकार में। परंतु केरल-सरकार ने जाहिर किया है कि हम जो भी कुछ करेंगे, वह आज के संविधान के अनुसार करेंगे और जरूरत पड़े, तो संविधान में फरक करेंगे। इस तरह फरक करने का हक सबको है। लेकिन अभी तक तो कुछ फरक हुआ नहीं है। परंतु इससे भूदान को कोई मतलब नहीं। भूदान तो चाहता है कि जनता की शक्ति बढ़े। वह करुणा की प्रक्रिया है। करुणा से प्रेरित होकर लोग स्वयं अपने को गाँव में और गाँव को अपने में सम्मिलित करें।

प्रश्न : जब हमारा देश समाजवाद के जरिये उन्नति पाने की कोशिश में है, तो आपके भूदान-कार्य की विशेषता क्या है?

विनोबा : भूदान प्रत्येक काम प्रेम और जन-शक्ति से करना चाहता है। अगर लोग जमीन की मालकियत छोड़ना प्रेम से कबूल करेंगे, तो वह समाजवाद से भी उत्तम कार्य होगा। हम नहीं समझते कि कानून से आज जमीन की मालकियत मिट सकती है, क्योंकि जो भी छोटे-बड़े मालिक हैं, वे बहु संख्या में हैं। मालिकी के नाते छोटे मालिक, बड़े मालिक, सब एक ही वर्ग में हैं। इसलिए कानून से मालकियत मिटे, ऐसी परिस्थिति देश में आज नहीं है। सीलिंग बना कर जमीन बाँट सकते हैं, फिर भी उससे मालकियत मिटेगी नहीं। सच्चा समाजवाद तो तब होगा, जब लोग प्रेम से अपनी मालकियत समाज को समर्पण करेंगे। हम 'सर्वोदय' को समाजवाद से उत्तम समझते हैं, क्योंकि समाजवाद के भी कई तरह के प्रकार होते हैं। हिटलर का भी एक समाजवाद था! इसलिए हम उस शब्द का उपयोग अच्छा नहीं समझते। अच्छा शब्द तो है 'सर्वोदय।'

प्रश्न : सक्रिय भूदान-क्रांति आज देश में कैसा परिवर्तन ला सकती है?

विनोबा : भूदान-क्रांति हृदय-प्रवेश की क्रांति है। इस वास्ते बहुत वेग से उसका प्रचार होता है, कोई भी हृदय अछूता नहीं रहता। एक जगह का परिणाम दूसरों पर होता ही है। आज ही एक ग्रामदान जाहिर हुआ। उसका असर आसपास के गाँवों पर क्या नहीं होगा? इस तरह सब करुणा से प्रेरित होकर खड़े हो जायँ, तो यह मसला ही हल हो जायगा।

प्रश्न : भूमि-समस्या हल करने के लिए आपका भूदान-आंदोलन और आज की सरकार जो सोच रही है, उसमें क्या कोई विरोध है? क्या दोनों एक नहीं हो सकते?

विनोबा : हमारा एक रास्ता है और सरकार का दूसरा रास्ता। लेकिन दोनों एक ही जगह जाना चाहते हैं। तथापि वे जिस रास्ते से जाना चाहते हैं, उससे वे मुकाम पर पहुँच नहीं सकते। वह बड़े जंगल और काँटे का रास्ता है। मान लो कि कानून से सारी जमीन छीन लेंगे, तो भी झगड़े होंगे। लिटिगेशन (मुकदमेबाजी) भी चलेगी। गाँव के लोगों में परस्पर-प्रेम भी नहीं रहेगा। आप प्रेम से कन्यादान देना पसंद करेंगे, या कोई आपकी कन्या छीन कर ले जाय, तो उसे आप पसंद करेंगे? आज हर घर की कन्या दूसरे के घर जाती है, परंतु झगड़ा नहीं है, क्योंकि प्रेम से काम बनता है और इसीलिए समाज में शांति रहती है। इसी तरह भूदान-ग्रामदान जनशक्ति बढ़ाने का आंदोलन है। उससे हवा बनती है। उस वातावरण का लाभ लेकर अगर लोकहित, लोक-कल्याण के लिए कानून बनता है, तो उस कानून का कुछ लाभ होता ही है। असंख्य सत्पुरुषों ने, राममोहन राय से लेकर महात्मा गांधी तक, सबने अस्पृश्यता पर जोर दिया और तब कानून बना। फिर भी आज जिस तरह का बर्ताव हरिजनों को मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है, क्योंकि कानून का अमल ठीक नहीं हो रहा है। इसलिए लोक-जीवन में परिवर्तन लाने के लिए लोक-विचार में और लोक-हृदय में परिवर्तन लाना जरूरी है।

(ता० १६, २२ और २६ जून को, केरल में)

www.vinoba.in

भाषाएँ सीखने का आनंद कैसे उठाया जाता है :

मातृभाषा-राष्ट्रभाषा और एक लिपि

(विनोबा)

मलयालम बहुत सुन्दर और समर्थ भाषा है। इस प्रदेश की मातृभाषा के नाते उसका अध्ययन तो सबको करना चाहिए, लेकिन सारे देश के लिए भी एक भाषा चाहिए, अन्यथा आपस-आपस में व्यवहार कैसे चलेगा? कुल भारत में अनेक प्रकार की विविधताएँ होते हुए भी यहाँ एक ही संस्कृति है। यह विविधता भारत का एक गौरव है। जैसे सप्त स्वर मिल कर सुन्दर संगीत बनता है, वैसे ही इस विविधता से एक सुन्दर संस्कृति बनी है। यह विविधता और एकता भारत की शक्ति भी है। पर विविधता का लाभ उठाने के लिए मातृभाषा के अलावा जो नजदीक के प्रदेशों की भाषा हैं, उसका भी अध्ययन करना चाहिए। उससे एक-दूसरे से परिचय बढ़ता है। फिर एकता का लाभ उठाने के लिए हिंदी का भी अध्ययन करना चाहिए।

हिंदी का डर रखने का कोई कारण नहीं है। उसका किसी पर आक्रमण नहीं हो सकता। मलयालम भाषावाले तो उसे आसानी से सीख सकते हैं, क्योंकि उनकी भाषा में संस्कृत के पचासों शब्द हैं, जो हिंदी में चल जाते हैं। धीरे-धीरे हिंदी का विकास होगा, तो संस्कृत के आधार पर ही होगा। विज्ञान की जो पारिभाषिक शब्दावली हिंदी में बन रही है, वह सारी संस्कृत में बन रही है और संस्कृत केरल की भाषा है। केरल में जितना संस्कृत का अध्ययन होता है, उतना शायद ही कहीं, काशी को छोड़ कर, होता होगा। हमने अखबार में पढ़ा : "भक्षण क्षामं," याने "अकाल", तो दोनों शब्द संस्कृत हैं। इसमें से "क्षामम्" शब्द तो उत्तर वाले भी जानते नहीं होंगे!

वेलूर-जेल में इस भाषा का अध्ययन हमने किया था, तो जो प्रथम किताब पढ़ी, उसमें ३०० संस्कृत शब्द थे! वे सब यहाँ रुचे-पचे हैं। अतः हमारी समझ में नहीं आता कि यहाँ हिंदी का प्रचार क्यों नहीं होता? केरलवालों को हिंदी सीखने की तो ज्यादा जरूरत है, क्योंकि केरल की जनसंख्या ज्यादा है और यहाँ के लोगों को हिन्दुस्तान के दूसरे-तीसरे प्रांतों में जाना होगा। आप पूछेंगे कि आपने तो मलयालम सीखी है, तो उसमें व्याख्यान क्यों नहीं देते? बात ऐसी है कि हिन्दुस्तान में १४ भाषाएँ हैं। उन सबका अध्ययन हमने किया है। उससे लाभ भी हुआ है, याने हमको उस-उस भाषावालों का प्रेम मिला है। लेकिन १४ भाषाओं में बोल कैसे सकते हैं? हमको ठीक-ठीक शब्द ही याद नहीं आते! क्योंकि एक भाषा में किसी शब्द का जो अर्थ होता है, वह दूसरी भाषा में बिलकुल भिन्न होता है—जैसे मलयालम में "संसार" याने भाषण, तमिल में "संसार" याने "पत्नी"। मलयालम में पानी के लिए कहते हैं, "वेल्लम्", अब तमिल में "वेल्लम्" का अर्थ होता है—"नदी की बाढ़" और पानी को कहते हैं, "तन्नीर", बंगला में कहते हैं "जल", कन्नड में बोलते हैं, "नीरु", मराठी में "पाणी" और हिन्दी में "पानी"। आपकी भाषा में "चरखा-मत्सर" चलता है! मत्सर याने कॉम्पिटिशन, स्पर्धा और हिंदुस्तानी में मत्सर का अर्थ बहुत खराब होता है। वहाँ चरखे का 'मत्सर' कभी नहीं होता, 'स्पर्धा' होगी। शायद यहाँ स्पर्धा का अर्थ खराब होता होगा। यहाँ "उद्योग" याने नौकरी! गांधीजी ने ग्रामोद्योग-सेवा-संघ निकाला। इसका अर्थ यहाँ होगा, गाँववालों को नौकरी देने की व्यवस्था! यहाँ कहते हैं, "औद्योगिक रिपोर्ट"। मतलब होता है, 'आफिशियल रिपोर्ट!' हिन्दुस्तानी में 'औद्योगिक' याने 'इन्डस्ट्रियल', कृषि याने खेती का धन्धा। मलयालम में भी वही अर्थ है, परन्तु तेलगू में कृषि याने प्रयत्न! मलयालम में आग्रह याने इच्छा। तेलगू में आग्रह याने क्रोध। गांधीजी ने 'सत्याग्रह' शब्द निकाला, तो आप कहेंगे कि सत्य की इच्छा, सत्याग्रह! लेकिन तेलगूवाले कहेंगे, सत्याग्रह याने सत्य का क्रोध, सत्य का गुस्सा! पर सत्य का क्रोध भी कभी हो सकता है? सत्याग्रह का अर्थ है, सत्य पर टिके रहना, सत्य पर अड़े रहना। इस प्रकार अनेक अर्थ के समान शब्द होते हैं। इसलिए एक मनुष्य को १४ भाषाओं में व्याख्यान देना मुश्किल होता है। ये सारे १४ भाषाओं वाले अपनी भाषा के अलावा हिन्दी सीख सकते हैं। हम तो हमेशा कहते हैं कि मनुष्य को दो आँखें होनी चाहिए। एक आँख है, मातृभाषा और दूसरी आँख है, राष्ट्रभाषा। उसके अलावा और भी एकाध-दो भाषाएँ सीखनी चाहिए। उनका बोझ नहीं होगा, आनन्द आता है। व्याकरण में कुछ समानता भी दीखती है। कई प्रक्रियाए हैं—जैसे, सुन्दर से तमिल में बनेगा "सुन्दरमाना", मलयालम् में होगा "सुन्दरमाया", कन्नड में होगा "सुन्दरवादा" और तेलगू में होगा "सुन्दरमेना।" शब्द एक ही, परन्तु प्रत्यय अलग-अलग लगा है, हरेक भाषा में। कहीं-कहीं शब्दों में थोड़ा फरक होता है, जैसा यहाँ और तमिल में कपास को कहते हैं "परुत्ती", तेलगू में कहेंगे "पत्ती।" यह परुत्ती का ही रूप है और कन्नड में "प" का होता है "ह", इस वास्ते वे कहेंगे "हत्ती"! याने उसको हाथी बना देंगे! इस तरह भाषा सीखने से आनन्द बढ़ता है।

हरेक भाषा के लिए अलग-अलग लिपि सीखनी पड़ती है। अगर एक ही लिपि सारे भारत में होती, तो बहुत ही अच्छा होता! योरप में अनेक भाषाएँ हैं, परन्तु लिपि एक ही है! इसका मतलब यह नहीं कि प्रचलित लिपि बिलकुल ही छोड़ दें। वह भी चले और नागरी भी चले। एक मजेदार कहानी सुनाता हूँ। लोकमान्य तिलक ने मांडले जेल में १९१५ में 'गीता-रहस्य' नाम का ग्रंथ लिखा। उसका तर्जुमा १९५६ में मलयालम भाषा में हुआ है! वह ग्रंथ मूल में मराठी में लिखा है, पर अनुवाद मूल मराठी पर से नहीं हुआ, उसके बंगाली अनुवाद से मलयालम में अनुवाद हुआ है। अभी यहाँ के एक भाई ने हमको वह दिया है। तो, इतने बड़े महान् ग्रंथ का तर्जुमा इस भाषा में ४१ साल के बाद होता है और वह भी बंगाली अनुवाद से! ऐसा सारा नहीं होता, अगर लिपि एक होती। आज हिंदी, मराठी, गुजराती, नेपाली भाषाएँ नागरी में ही लिखी जाती हैं। अगर आपकी भाषा भी नागरी में लिखी जाय, तो आप पन्द्रह दिन में हिन्दी सीख सकते हैं। पर इसका आरम्भ कैसा होगा? तो मित्रों-मित्रों के बीच जो पत्र-व्यवहार चलता है, वह मलयालम भाषा और नागरी लिपि में लिखा जाय। हमारा बंगाली, कन्नड, तेलगू, तमिल आदि भाषावालों से पत्र-व्यवहार चलता है। हमारा आग्रह रहता है कि वे नागरी लिपि में लिखें। पढ़ने में हमको कुछ भी कष्ट नहीं होता। आप भी वैसा करेंगे, तो धीरे-धीरे वह विचार बढ़ेगा। राष्ट्रभाषा हिन्दी सीखने की जितनी जरूरत है, उतना ही जरूरी यह है कि अनेक भाषाओं की लिपि एक बने।*

*प्रवचन के पूर्व हिन्दी-भाषा-परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को विनोबाजी के हाथों सभा में प्रमाण-पत्र दिये गये।
मलप्पुरम्, कोलीकोड, २७-६-'५७

तंत्रमुक्ति-निधिमुक्ति के बाद—

हममें से शायद कुछ लोग ऐसे हों, जिनका यह ख्याल हो कि तंत्रमुक्ति का और निधि-मुक्ति का जो कदम उठाया गया था, वह ठीक नहीं था! लेकिन ऐसे मित्र कम ही होंगे। बावजूद इस अनुभव के कि तंत्रमुक्ति और निधिमुक्ति के बाद काम कुछ घटा है, कार्यकर्ताओं की संख्या घटी है और संयोजन की शक्ति भी घटी है, फिर भी हम अगर इस पर से यह नतीजा निकालें कि फिर से बाहर से रुपया लेना शुरू किया जाय और उसी प्रकार से कमिटियों का निर्माण किया जाय, तो हम पीछे ही जायेंगे, आगे नहीं। एक बहुत बड़ा प्रयोग हो रहा है, तो इसमें उतार-चढ़ाव होगा ही।

इससे जो अनुभव और शिक्षण प्राप्त होगा, उसमें से नयी शक्ति का ही निर्माण होगा और कार्य आगे बढ़ेगा। कार्यकर्ताओं की संख्या भी बढ़ेगी, उत्साह भी बढ़ेगा और संयोजन भी अच्छा होगा, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है। हम अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहे हैं, तो थोड़ी-सी कमजोरी का अनुभव हो रहा है! पैर कमजोर हैं, वे लड़खड़ाते हैं, गिर जाते हैं, फिर भी आखिर हमें अपने पैरों पर ही खड़े होकर चलना है। लोग हमें सहारा देते रहें और लाखों रुपया हम बाहर से मँगा कर काम करते रहें, तो सदा ही हम कमजोर रहेंगे और निकम्मे भी। कार्यकर्ताओं की शक्ति का भी विकास नहीं हो सकेगा। इसका मतलब यह भी होगा कि आन्दोलन का विकास नहीं होगा!

उस समय यह जो आशा रखी गयी थी कि ऐसा कदम उठाने से जनता इस आन्दोलन को उठा लेगी, सो नहीं हुआ है, इसे निस्संकोच भाव से मानना चाहिए। आन्दोलन इस जगह पर अभी नहीं पहुँचा है कि गाँव-गाँव की जनता स्वयं इसको उठा ले, गाँव-गाँव में कार्यकर्ता भी पैदा हो जायँ और यह अपना ही काम है, ऐसा समझ कर सब इसे करें। लेकिन आज नहीं, तो कल; कल नहीं तो परसों यह होगा ही, इसमें भी हमें कोई सन्देह नहीं है, क्योंकि इस विचार पर हमारा विश्वास है, सब लोगों का विश्वास है और आपका भी विश्वास होगा, ऐसा मैं मानता हूँ! अभी हम पहली अवस्था से गुजर रहे हैं, जब कि दूसरों का सहारा छोड़ा है! इसके बाद, हम अपनी शक्ति से और बल से कैसे काम करें, यह सबक भी हम सीख रहे हैं। इसमें कुछ लोग गिर रहे हैं, कुछ बढ़ भी रहे हैं। लेकिन इससे काम आगे ही बढ़ेगा, इसमें शक नहीं।

पूसा रोड़, कार्यकर्ताओं से, ता० २९-६ —जयप्रकाश नारायण

www.vinoba.in

मानव-मानव के बीच की संयोग-स्थली

(विनोबा)

परमेश्वर को नमस्कार करते हुए दो शब्दों में परमेश्वर का वर्णन भर्तृहरि ने किया है—"नमः शांतायं तेजसे"—शांत और तेजस्वी। मनुष्य के जीवन का भी यह वर्णन है। यह जीवन ईश्वर-भक्ति के लिए है। दूसरे प्राणियों का जीवन भोग के लिए होता है। मनुष्य को भी शरीर को खिलाना-पिलाना होगा, परंतु उसमें भोग की भावना नहीं रहेगी। ईश्वर-भक्ति का साधन समझ कर उसे वह करना होगा।

परमेश्वर की भक्ति याने उसके गुणों की भक्ति। परमेश्वर दयालु है। तब भक्ति का रूप क्या होगा? तो हम भी अपना जीवन दयामय बनाने की कोशिश करेंगे। परमेश्वर सत्य-स्वरूप है, तो भक्ति का रूप होगा कि हम अपने जीवन में सत्यनिष्ठा बढ़ायें। इस तरह भक्ति का स्वरूप है, ईश्वर के गुणों की उपासना। उपासना याने ईश्वर के गुणों का चिंतन करना और उन गुणों पर चलने का प्रयत्न करना। कुछ लोग समझते हैं कि ईश्वर के गुण गाने के लिए होते हैं। सिर्फ गायन करने से उपासना नहीं होती। गाने के साथ चिंतन होना चाहिये और चिंतन के साथ उस पर चलने का प्रयत्न होना चाहिये। ईश्वर परम दयालु है। हम तो परम दयालु नहीं हो सकते, परंतु वैसी कोशिश हमको करनी चाहिये। अपने जीवन में दया के काम होने चाहिये और मन में दया की भावना होनी चाहिये। मनुष्य का जीवन ईश्वर की उपासना करने के लिए है। जैसी उपासना होगी, वैसा जीवन बनता है।

भर्तृहरि ने ईश्वर का रूप शांत और तेजस्वी, इन दो गुणों को इकट्ठा करके हमारे सामने रखा। लेकिन आज दुनिया में क्या अनुभव आता है? जहाँ तेज होता है, वहाँ शांति का अनुभव नहीं आता और जहाँ शांति है, वहाँ तेज का अभाव दीखता है! शिक्षक तेजस्वी होगा, तो विद्यार्थी उससे डरते हैं। जहाँ शिक्षक शांत होता है, विद्यार्थी उसको मानते नहीं। तेज के साथ शांति नहीं दीखती। वास्तव में दोनों ही साथ-साथ चाहिये।

नेता कैसा चाहिये, इसके लिए कालिदास ने सुंदर उपमा दी है: समुद्र के समान आकर्षक और समुद्र के समान भयानक। समुद्र में बड़े-बड़े भयानक प्राणी होते हैं, इस वास्ते भय लगता है। परंतु उसके अंदर मोती होते हैं, इस वास्ते आकर्षक है। उसका गांभीर्य और तेज देख कर मनुष्य आदर से उससे दूर होता है। परंतु आकर्षण होता है, तो उसमें तैरने जाता है। दोनों गुण समुद्र में हैं। वैसे ही भर्तृहरि ने तेज और शांति, ये दो गुण इकट्ठा कर दिये।

आज के समाज की हालत बदलने के लिए इन दोनों गुणों की आवश्यकता होगी। उसमें से एक भी कम होगा, तो काम नहीं होगा। शांति और प्रेम, दोनों प्रगट होंगे, तब तो जो हम करना चाहते हैं, वह होगा। एक शेर और दूसरा शेर, इनमें बहुत ज्यादा फरक नहीं है। परंतु आज मनुष्य-मनुष्य में फरक दीख रहा है। एक बड़ा महात्मा है, तो दूसरा पशु से भी बदतर पशु है। मनुष्य की यह खूबी है कि वह ऊपर भी चढ़ सकता है और नीचे भी गिर सकता है। यह शक्ति जानवरों में नहीं है। गाय कितनी भी इच्छा करेगी, तो भी वह मांसाहार नहीं कर सकती। बाघ कितना भी पुण्यवान हो, मांसाहार नहीं छोड़ सकता। पर मनुष्य चाहे तो मांसाहार कर सकता है, चाहे तो छोड़ सकता है। उपवास भी कर सकता है या फलाहार भी कर सकता है। मनुष्य ऊपर इतना चढ़ सकता है कि वह देवता की कोटि में जा सकता है और नीचे-से-नीचे इतना गिर सकता है कि पशुओं से भी नीचे। यह शक्ति परमेश्वर ने मनुष्य में रखी है। यह भगवान् की कुशलता है। मनुष्य आजाद है। चाहे वह ऊपर चढ़े या गिरे। परिणाम यह हुआ कि कोई मानव भी न रहे और कोई महात्मा बन गये। इतना भेद क्यों! क्योंकि मनुष्य के लिए परिस्थिति अनुकूल नहीं।

आज समाज में कुछ ऐसे लोग हैं, जो कि बहुत ऊँचे चले गये हैं। उनका संबंध समाज के साथ आता नहीं। लोग भी क्या करते हैं! उनको प्रणाम कर लेते हैं। उनका अनुकरण नहीं करते, क्योंकि इतना अंतर बढ़ गया कि ज्यादा अनुकरण कर नहीं सकते। इसलिए महात्माओं की पूजा होती है, परंतु उनके विचारों पर अपना जीवन नहीं बनाते। इसका कारण यह है कि ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के विकास के लिए सबको समान अवसर नहीं मिलता है। कुछ ऐसे होते हैं, जिनकी ज्ञानशक्ति विकसित हुई है, पढ़ना-लिखना जानते हैं, परंतु काम की आदत नहीं, पंगु बने हैं। धूप, बारिश, ठंढ सहन नहीं कर सकते। एकांगी जीवन जीते हैं। दूसरे होते हैं, जिनकी कर्मशक्ति विकसित हुई है, काम ही काम करते रहते हैं, परंतु जिन औजारों से काम करते हैं, उनमें सुधार करने की भी अक्ल उनमें नहीं है। कुछ ऐसे होते हैं, जिनके पास ज्ञानशक्ति भी नहीं और कर्मशक्ति भी नहीं। और कुछ ऐसे हैं, जिनको दोनों शक्तियों के विकास का अवसर प्राप्त हुआ है। अब कितना फरक पड़ेगा, इन चार प्रकारों में? उस हालत में दुनिया में संघर्ष बनता है और बहुत से मसले पैदा होते हैं। तो ज्ञान-शक्ति और कर्म-शक्ति के विकास का सबको समान अवसर मिलना चाहिये। इसीको हम साम्ययोग कहते हैं। साम्ययोग याने संपत्ति समान हो, यही नहीं है। वह तो है, परंतु वह गौण है। संपत्ति के अभाव से अवसर मिलता नहीं, यह ठीक है, परंतु मुख्य बात यह है कि **ज्ञान और कर्म का सबको समान अवसर मिलना चाहिये।**

ग्रामदान–भूदान की मुख्य वस्तु है, ज्ञान-कर्म का सबको समान अवसर। यह होगा, तो मनुष्य बहुत शक्तिशाली होगा और मानव-मानव का अंतर कम होगा।

(इलापुल्ली, पालघाट, ३०-५-'५७)

विनोबा-प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : आपकी पक्षरहित, शासन-मुक्त समाज-रचना का स्वर्गीय एम० एन० राय के विचारों के साथ साम्य दीखता है। उनके रेडीकल कम्युनिस्ट आंदोलन से क्या आपका कोई संबंध है? १९४८ में उन्होंने राष्ट्रीय पक्ष को तोड़ने की हिम्मत की थी, वैसे क्या आप भी अपने प्रभाव से कांग्रेस, पी० एस० पी० को तोड़ने की कोशिश करेंगे?

विनोबा : हम सत्ता का विकेंद्रीकरण चाहते हैं, शासन-मुक्त समाज बनाना चाहते हैं। अगर एम० एन० राय के विचार इसी प्रकार के रहे हों, तो आनंद की ही बात है। हम राजनीति को समाप्त करके उसकी जगह लोकनीति कायम करना चाहते हैं। लोकनीति प्रेम, करुणा और समत्व के ही आधार पर होगी। राय आखिर में इस निर्णय पर आये होंगे, तो उनके आदर्श पर चलने वाले जो भी लोग होंगे, उनको भूदान में जरूर आना चाहिये।

पोलिटिकल पार्टियाँ तोड़ने की कोशिश हमने भी की, परंतु उनमें और हममें फरक है। उन्होंने पोलिटिकल पार्टी पहले बनायी थी और बाद में तोड़ी, याने उनका परिवर्तन हुआ। हमने तो पार्टी बनायी ही नहीं, इस वास्ते तोड़ने का सवाल ही नहीं! इस वास्ते हमने कहा कि हम समुद्र हैं, नदियों को इसमें आना है! हम किसी पार्टी को तोड़ने की कोशिश नहीं करते। परंतु हम क्या कर रहे हैं, यह सब देखते हैं। हमारे विचार स्पष्ट हैं। वे हमारे नजदीक आयें, तो हम खुश होंगे। उनको धीरे-धीरे नजदीक आना ही पड़ेगा। श्री जयप्रकाशजी पी० एस० पी० में थे। अब भूदान में आये हैं। पी० एस० पी० से उनके संबंध अभी हैं या नहीं, नहीं जानते। होंगे तो कब तक, यह भी नहीं जानते। परंतु नदी समुद्र में मिलने आ रही है, वैसे ही उड़ीसा के मुख्य मंत्री नवबाबू भी भूदान में आये हैं। बालू की घड़ी में एक-एक कण नीचे ही गिरता है, नीचे वाला ऊपर नहीं जाता! ऊपर वाला नीचे आता है। यह समुद्र खुला है। सबको कहता है कि आ जाओ। कोशिश क्या करनी है? वे सारे नीचे आने ही वाले हैं। क्या समुद्र कोशिश करता है पानी को खींचने की? वह अत्यन्त नम्र है! इसलिए सबको आना ही है।

नम्र मनुष्य क्या करता है? सबके नीचे बैठता है। कोई उन्मत्त पानी बिलकुल पहाड़ के ऊपर होता है, कोई जरा नीचे होता है। पर समुद्र कहाँ है? वह परम नम्र है, इसलिए सबसे नीचे है। इस वास्ते हम कहते हैं, कांग्रेस, पी० एस० पी० सबको लीन होना है इस समुद्र में। पंडित नेहरू ने पार्लियामेंट में कहा था, "हम सोशलिस्ट स्टेट् बनाने जा रहे हैं। सोशलिस्ट शब्द से सर्वोदय का शब्द अच्छा है, अपने देश का वह शब्द है, उसका अर्थ भी अच्छा है और इस भूमि में ही वह पैदा हुआ है, लेकिन उस नाम को हम नहीं ले सकते, क्योंकि उनका काम हम कर पायेंगे कि नहीं इसकी जरा शंका है। इसलिए हम सोशलिस्टिक कहते हैं, पर हमारा उद्देश्य तो सर्वोदय का ही है।" यह क्या दिखाता है? सर्वोदय में लीन होने की ही तो तैयारी चल रही है! धीरे-धीरे उधर उतर रहे हैं। जरा धक्का मिलेगा, तो ये लोग समुद्र में जल्दी आयेंगे। धक्का कौन देगा? ग्रामदान चलाते हो, तो धक्का मिलेगा। इसको देरी हुई, तो उनके आने में भी देरी होगी।

सर्वोदय को सब अच्छा समझते हैं। परंतु उनको शंका आती है कि क्या यह इस जमाने में हो सकता है? फिर भी लोगों को थोड़ा-थोड़ा विश्वास पैदा हुआ है। बाबा की भी प्रतिष्ठा है थोड़ी, लेकिन आज बाबा कहेगा कि कांग्रेस को तोड़ दो, पी० एस० पी० को तोड़ दो और आओ सर्वोदय में, तो क्या बाबा की हँसी नहीं होगी? बाबा की क्या ताकत है? पर ग्रामदान

www.vinoba.in

दे दो, तो बाबा की ताकत बनेगी। अगस्त्य ऋषि समुद्र पीने के लिए तैयार होगा, परंतु बाबा पीने बैठेगा, तो क्या होगा? पेट भर जायगा, फिर फट जायगा और बाबा मर जायगा! इसलिए पहले बाबा को अगस्त्य बनने दो। कुल केरल का दान दे दो, फिर देखो कांग्रेस, पी० एस० पी० इसमें आती हैं या नहीं! चीज तो अच्छी है, परंतु होती नहीं। इसलिए क्या किया जाय? बाबा कुछ अक्ल रखता है, इसलिए वह नम्र बनना चाहता है, अपने काम से लोगों पर असर डालना चाहता है। किसी राजनैतिक पार्टी के पास नहीं जाता, तुम लोगों के पास आता है, क्योंकि तुमने ही तो उनको बनाया है! इसलिए तुमसे ही वह कहता है। यह आध्यात्मिक आंदोलन, प्रेम-करुणा के विचार पसंद हैं, तो करो यह काम। फिर लोग समझेंगे, करुणा के विचार में आज भी ताकत है!

प्रश्न : आपकी अहिंसा धीरे-धीरे जमीन पर चल रही है और हिंसा आसमान में। बड़े-बड़े आचार्यों के प्रयत्नों के बावजूद अहिंसा की अभिवृद्धि इतनी ही हुई है। इस हालत में क्या अहिंसा के लिए समय आने वाला है?

विनोबा : तो अहिंसा याने जमीन पर धीरे-धीरे चलने वाली चींटी और हिंसा याने विहंगम पक्षी! अब सवाल है, क्या गरुड़ पर चींटी कब्जा कर लेगी? ऐसा समय भी कभी आयेगा? हम इतना ही कहते हैं कि वह समय आज आया है! यही हमारा उत्तर है। आज वह विहंगम पक्षी नीचे गिर रहा है। फिर चींटियाँ ही उस पर कब्जा करेंगी। पटरी पर से एक ट्रेन बहुत वेग से जा रही है। पटरी पर ही एक चींटी है। वह क्या करती है? जरा नीचे खिसकती है, तो बच जाती है, सुरक्षित रहती है। ट्रेन की यह ताकत नहीं कि जरा पटरी के बाहर जाकर चींटी को खतम करे! आज यह हिंसा इतनी बढ़ गयी है कि दुनिया का मसला हल करने की ताकत उसमें नहीं रही है। बड़े-बड़े संपन्न, समृद्ध, सब प्रकार से परिपूर्ण देश आज एक-दूसरे के डर से काँप रहे हैं। एक टेबुल पर प्रेम से बातें करने बैठते हैं, परंतु उधर शस्त्रास्त्रों का मजबूत प्रबंध करते हैं! परिणाम यह होता है कि दुनिया आगे बढ़ ही नहीं रही है। तो आखिर में अहिंसा की शरण में आना ही पड़ेगा। हम कहते हैं, जितनी हिंसा बढ़ेगी, उतना अच्छा है! उत्तरायण बढ़ जाता है, तो दक्षिणायन आने वाला ही है।

पुराने जमाने में क्या होता था? कोई वाद उत्पन्न हुआ कि कुश्ती होती थी, द्वन्द्वयुद्ध होता था! जो जीता, उसकी जय! जैसे जरासंध और भीम की कुश्ती! आज अगर वैसा होता, तो हम कितने सुखी होते! मान लो कि स्टालिन और हिटलर की कुश्ती हुई होती, तो करोड़ों लोगों को मरना नहीं पड़ता! आज तो एक हारता है और दूसरा जीतता है, तो हारने वाला अपनी सेना और भी बढ़ाता है! फिर वह जीतता है, तो दूसरा हारता है और वह भी अपनी सेना बढ़ाता है! एक ने बंदूक ली, तो दूसरा तोप बनाता है! एक ने तोप ली, तो दूसरा बम बनाता है! इस तरह बढ़ते-बढ़ते इस हद तक वे आगे बढ़ेंगे कि मनुष्य-प्राणी ही खतम हो जायगा। इसीलिए आज सब वर्ल्ड-पीस (विश्वशांति) चाहते हैं।

इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी कम ज्ञान-प्रेमी नहीं हैं। इंग्लैंड और बर्लिन में सबसे बड़े ग्रंथालय हैं, दुनिया की किताबें वहाँ इकट्ठा की गयी हैं। अपने देश में जो पुराना ग्रंथ नहीं मिलेगा, वह वहाँ मिलेगा। परंतु मौका आया कि एक-दूसरे के ग्रंथालय पर ही बम डालने के लिए वे तैयार हो जाते हैं। तो ऐसी मूढ़ हिंसा कब तक चलेगी? यह हिंसा इतना जोर तो कर रही है, परंतु वह मरने वाली है। दीपक जब बुझने की तैयारी में होता है, तो एकदम बड़ा होकर बुझता है। उसी तरह हिंसा कमजोर ही होती जा रही है। वह अब बुझना चाहती है! मानव को शांति की प्यास और शांति की भूख लगी है। समाज के मसले शांति, प्रेम, करुणा से हल हों, ऐसी वासना अत्यन्त है। इस वास्ते दुनिया के लोग भूदान, ग्रामदान-आन्दोलन भी देखने आते हैं। हम जाहिर करना चाहते हैं कि कुल दुनिया में शांति की स्थापना, यदि चाहें, तो अकेला केरल प्रदेश ही कर सकता है-केरल का दान देकर!

दान देते हैं, तो भी जमीन तो वहीं रहेगी। उससे आपको खाने को मिलेगा और दूसरों को भी। साथ में सबका प्रेम बना रहेगा। मसला शांति से हल किया, तो उसका परिणाम दुनिया पर होगा और नैतिक शक्ति बढ़ेगी। केंद्र-सरकार खुश होगी, यहाँ की कम्युनिस्ट-सरकार भी खुश होगी। वह यह नहीं कहेंगी कि हमारा दुर्दैव है कि बाबा ने हमारे लिए करने के लिए कुछ नहीं रखा! इस प्रकार कुल हिंदुस्तान की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और देश की आवाज बुलंद होगी। परिणामतः दुनिया को शांति की राह दीख पड़ेगी।

(कुटीपुरम्, पालघाट, २४-६-'५७) ——

संपत्तिदान का उद्देश्य और विनिमय

(जयप्रकाश नारायण)

ग्रामदान की चर्चा के पहले संपत्तिदान के विषय में मैं यहाँ कुछ चर्चा कर लेना चाहता हूँ।

भूदान-आंदोलन में हम यह भी देखते हैं कि विचारों का चढ़ाव-उतार आता है, कभी एक चीज को पकड़ लिया जाया जाता है, तो उसको छोड़ कर दूसरी भी चीज पकड़ लेते हैं। इस तरह से चलता रहता है। बीच में जोरों से कहा जा रहा था, बाबा ने भी बहुत जोर दिया था कि संपत्तिदान पर अपनी पूरी शक्ति लगानी है। कुछ शक्ति लगी भी। अब उसमें फिर शिथिलता आ गयी है। परंतु मुझे इस समय जिस बात पर जोर देना है, वह दूसरी है। निधिमुक्ति-तंत्र-मुक्ति के प्रश्न पर विचार करने के लिए जब खादीग्राम में सब इकट्ठे हुए थे, तो उसमें मैंने चेतावनी दी थी कि संपत्तिदान-आन्दोलन को कार्यकर्ताओं के निर्वाह के साथ अगर जोड़ा जायगा, तो उसमें मैं बड़ा खतरा देखता हूँ! संपत्तिदान किस निमित्त से है, उसका उद्देश्य क्या है, यह सब हम भूल जायेंगे और चंदे की तरह उसका उपयोग होगा!

आज भी मेरा ऐसा खयाल है कि भूदान-ग्रामदान आदि का जो आन्दोलन चल रहा है, उसीका संपत्तिदान एक अंग ही है। किसी एक आवश्यकता की पूर्ति के लिए या खर्चे की पूर्ति के लिए रुपये की आवश्यकता है, इसलिए संपत्तिदान-आन्दोलन हरगिज नहीं पैदा हुआ। संपत्ति के स्वामित्व के विसर्जन का ही विचार उसके पीछे है, जैसे कि भूमि के स्वामित्व के विसर्जन का विचार भूदान और ग्रामदान-आन्दोलन के पीछे है। यह कुल मिल कर एक ही सर्वोदय-आन्दोलन है। उसके ही ये भिन्न-भिन्न रूप हैं। अतः संपत्तिदान के ऊपर आज नहीं, तो कल हमें सारी शक्ति लगानी होगी। ग्रामदान का कार्य पूरा हो जाता है, तो यह कार्य आसान हो जाता है, यह ठीक है, लेकिन यह कार्य अपना भी एक अलग महत्त्व रखता है और केवल शहरों के लिए या संपत्तिवालों के लिए ही उसका महत्त्व है, ऐसी बात बिलकुल नहीं है। भूदान हम दस कट्ठेवाले से भी माँगते हैं या ग्रामदान में श्रम करने वाला मजदूर भी शरीक होगा, ऐसा हम कहते हैं। गाँव के मजदूरों ने अपना श्रम गाँव को समर्पित नहीं किया और छोटे-छोटे किसानों ने अपना स्वामित्व भी विसर्जन नहीं किया, तो ग्रामदान नहीं हुआ, ऐसा हम मानते हैं, केवल बड़े-बड़े मालिकों से ही भूमि का स्वामित्व-विसर्जन कराने की हमारी अपेक्षा नहीं है! उसी प्रकार संपत्तिदान हर किसीके लिए है। जो कम-से-कम कमाता है, उसके लिए भी है, क्योंकि उसके विचार भी वे ही हैं, जो पूँजीवादी समाज में संपत्ति के संबंध में आज हैं। वह स्वामित्व का, संग्रह का भी विचार मानता है, स्वार्थ भी उसमें है। जो बात अमीरों में है, वही गरीबों में भी है। कोई अन्तर ही उसमें नहीं है। तो, भूदान का सारा विचार इस पर भी लागू होता है, अतः संपत्तिदान हर किसीके लिए है और सबको विचार समझा कर, हमारा प्रेम और हमारी सेवा लोगों को देकर सबसे उस स्वामित्व का भी विसर्जन हम करायेंगे, इसी आशा से, उत्साह से हम काम कर रहे हैं। हम यह नहीं मानते हैं कि संपत्तिदान का विचार अच्छी तरह से समझ लेने के बाद भी संपत्तिवान् संपत्ति-दान नहीं करेंगे। तब तो फिर हमें, अहिंसक क्रांति की जो पूरी प्रक्रिया है, वही छोड़ देनी पड़ेगी। कुछ अधिक संपत्तिवाले ऐसे हैं, जो इस तरह आगे बढ़ने के लिए कम तैयार हैं, जैसे कि जमीन के बड़े मालिक! लेकिन छोटे-छोटे मालिकों का जब परिवर्तन होता है, अपने स्वामित्व को वे जब छोड़ते हैं और सारी संपत्ति समाज की है, यह विचार जब समाज में फैलता है, तो उन लोगों को भी इसमें आना ही पड़ेगा! आज वे इन्कार करते हैं, तो भी कोई हर्ज नहीं। उससे संपत्ति-दान बन्द नहीं होता है। मास में १५ रुपया कमाने वाला जो मजदूर है, उससे भी १५ पैसा हम लोग माँगेंगे, माँगते ही हैं—यह विचार समझा कर कि उसके जीवन का परिवर्तन हमें करना है!

संपत्तिदान का यह भी रूप है कि जिनके पास पैसा देने की सामर्थ्य नहीं, वह अपना पैदा किया हुआ अनाज और पैदा किया हुआ वस्त्र भी दे सकता है। बुनकर बुना हुआ कपड़ा या तेली तेल भी दे सकता है! जो वह पैदा करता है, उसका एक हिस्सा दे। मन भर में से एक सेर दे या आध सेर, पर जो देने योग्य हिस्सा है, वह दे। तो, मैं चाहता हूँ कि इस प्रश्न के संबंध में हमारे बीच में स्पष्टता हो। सम्पत्ति-दान का आन्दोलन कार्यकर्ताओं के निर्वाह की दृष्टि से नहीं चलाया गया।

www.vinoba.in

दूसरी बात, कोई दानी अगर कहता है कि हम जो दान दे रहे हैं, उसका आप फलाँ उपयोग कर सकते हैं या सबका सब कार्यकर्ताओं के निर्वाह के लिए ले सकते हैं, तो हम वैसा अवश्य करें। उनसे कह भी सकते हैं कि कार्यकर्ताओं के निर्वाह के लिए इसमें से इतने खर्च करने की जरूरत है या भूमिहीनों को खेती के साधन देने के लिए या साहित्य के लिए जरूरत है। ये तीन काम बाबा ने रखे थे, पर और भी चार-पाँच जोड़े जा सकते हैं, काल-परिस्थिति के अनुसार। ऐसी बात नहीं है कि तीन जरिये बना दिये हैं, तो चौथा हो ही नहीं सकता! दानियों को तो पूरी आजादी है कि जिस तरह चाहें, वे दान में खर्च कर सकते हैं। मार्गदर्शन के लिए एक सुझाव उनको बतला दिया जाय कि इन तीन कामों में आप खर्च कीजिये। हम तो बराबर कहते हैं कि हमें कोई अधिकार नहीं है कि मैं आपको बताऊँ कि किस तरह से, या बाबा बतायें कि किस तरह से आप खर्च करें! 'इसे किसीकी सेवा में खर्च करो और तुम्हारे पास जो है, उसमें दूसरों का बहुत हिस्सा है, यह स्वीकार करो', इतना ही हम कहेंगे। संपत्तिदान जिससे भी माँगना हो, विचार समझाये बगैर तो नहीं माँगना चाहिए। किस हद तक वह विचार समझा है और किस हद तक नहीं समझा है, यह दूसरी बात है। लेकिन किसी भी बात को अस्पष्ट रख कर तो यह करना ही नहीं है! श्रमदान को भी हम संपत्तिदान कह सकते हैं, लेकिन उसको श्रमदान ही कहा जाना ठीक है, क्योंकि उसके पास श्रम ही है। लेकिन बाकी जो-जो चीजें उत्पादक पैदा करते हैं, उनमें से भी वे संपत्तिदान कर सकते हैं। नकद ही देना चाहिए, ऐसी कोई बात नहीं है।*

* बिहार प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन, पूसा रोड; ता. २९-६ के भाषण का एक अंश।

बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ का प्रस्ताव :

"खादी और ग्रामोद्योगों के बारे में विचारों की उलझन आजकल बहुत ज्यादा फैल रही है। इसीका नतीजा है कि इनके विकास के लिए बेमन से और जैसे-तैसे उपाय किये जाते हैं। इनके महत्त्व और मूल्यांकन का सम्बन्ध लक्ष्यों और कार्यक्रमों की पूर्ति से जोड़ा जाता है। यह भी मान लिया जाता है कि इन कार्यक्रमों के सफल बनाने का कुल दायित्व देश की खादी-संस्थाओं पर ही है।

"विचारों की इस उलझन को देख कर बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ इस विषय के सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना आवश्यक समझता है :

"बहुतों के लिए, जिनमें अधिकारी-वर्ग भी हैं, खादी-ग्रामोद्योगों का इसके अतिरिक्त और कोई महत्त्व नहीं है कि भारत की अनोखी स्थिति में देहात की आंशिक या पूरी बेकारी की समस्या का हल इसमें है। इस विचार का अर्थ यह है कि अगर देहाती बेकारी की समस्या नहीं होती या उसका कोई दूसरा हल होता, तो देश की अर्थव्यवस्था में खादी का कोई स्थान नहीं होता।

"पर यह याद रखना चाहिए कि महात्मा गांधी ने इस विचार से खादी-ग्रामोद्योगों का कार्यक्रम नहीं चलाया था। उनके लिए यह कार्यक्रम किसी अस्थायी आर्थिक समस्या के सुलझाव का कोई अस्थायी उपाय मात्र नहीं था। गांधीजी के लिए खादी-ग्रामोद्योग एक समग्र जीवन तथा सामाजिक रचना के दर्शन का मूर्तिमन्त रूप था। उनका उद्देश्य समतायुक्त, स्वाधीन और अहिंसक समाज-व्यवस्था था। उन्होंने इस बात का प्रचार किया कि ऐसा समाज तब तक न तो स्थापित हो सकता है और न कायम रखा जा सकता है—यदि और बातों के साथ धन का उत्पादन और वितरण केन्द्रित विधि से होता हो। केन्द्रीकरण का अवश्यम्भावी परिणाम समता और स्वाधीनता में बाधा तथा हिंसा ही है। इसलिए वे मानते थे कि सभी आर्थिक, राजनैतिक तथा दूसरे क्रियाकलाप, जहाँ तक हो सके, विकेन्द्रित ही किये जायँ। पर यदि किसी विशेष प्रकार के उत्पादन में केन्द्रीकरण अपरिहार्य मालूम हो, तो उसे आवश्यक बुराई समझ उचित नियंत्रण के साथ स्वीकार करना चाहिए, जिससे कि यह भरोसा रहे कि ऐसे उत्पादन से जहाँ तक सम्भव है, सर्व-सामान्य कल्याण और सार्वजनिक उद्देश्य पूरा होगा।

"गांधीजी ने यह भी सीख दी कि केन्द्रित उत्पादन का अनिवार्य परिणाम आवश्यकताओं की अमर्यादित वृद्धि है। फलस्वरूप उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निरन्तर व्यग्रता रहती है। उन्होंने दिखा दिया कि ऐसे समाज में शान्ति, परस्पर-सद्भावना और सहयोग नहीं हो सकता। इसलिए उनका उपदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकता तो पूरी होनी ही चाहिए, पर सदा वर्धमान मौलिक आवश्यकताएँ मानव-जीवन और सभ्यता का लक्ष्य नहीं माना जाये। इसलिए मुख्य रूप से निजी या स्थानीय उपयोग के लिए चलाये जाने वाले छोटे-छोटे विकेन्द्रित उद्योगों को वे अपनी कल्पना के अहिंसक, सम और स्वाधीन समाज के लिए सबसे उपयुक्त आर्थिक ढाँचा मानते थे।

"बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ का जन्म महात्मा गांधी की महान् प्रेरणा से ही हुआ है। **इसलिए संघ केवल पूरी या आंशिक रोजगारी का प्रबन्ध करने के लिए ही काम नहीं करता**—यद्यपि निश्चय ही यह भी उसके उद्देश्यों में एक है—बल्कि, संघ महात्मा गांधी के बताये समाज की रचना के लिए ही प्रयत्नशील है। यह दूसरा काम ही संघ का मुख्य उद्देश्य है।

"आज सारे संसार को शान्ति की प्यास है और सभी समझदार लोग संघर्ष और युद्ध की जड़ उखाड़ने का उपाय सोच रहे हैं। बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ का दृढ़ मत है कि संसार को शान्ति और सुख की खोज में सफल होने के लिए महात्मा गांधी के चरण-चिह्नों पर चलना ही होगा एवं अन्य बातों के साथ-साथ विकेन्द्रित आर्थिक और राजनैतिक पद्धति अपनानी होगी। अत्यन्त केन्द्रित समाजों को भी उसी ओर बढ़ना होगा।

"बिहार-खादी-ग्रामोद्योग-संघ मानता है कि अब समय आ गया है, जब कि कार्यकर्ता और संस्थाएँ-खास करके अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग-आयोग इस पर विचार करे और अपने तथा जनता के सामने खादी-ग्रामोद्योग-कार्य के मूल विचार को रखे।" *

—मंत्री

* पूसा रोड (बिहार) में हुई संघ की बैठक में स्वीकृत प्रस्ताव से।

उड़ीसा-सरकार से !

[अ० भा० सर्व-सेवा-संघ के कोरापुट (उड़ीसा) केंद्र द्वारा प्रकाशित होने वाले 'ग्रामदान' समाचार-बुलेटीन के जून-अंक में निम्न संपादकीय प्रकाशित हुआ है। सं०]

सहकारी खेती ही सर्वत्र हो, इस विचार से आज हम इतनी बुरी तरह भर गये हैं कि हमने अपनी तमाम पुरानी पद्धतियों में से तक विश्वास खो दिया है। स्वभावतः इस दृष्टि से ग्रामदानी गाँवों के प्रति कुछ आशाएँ की जा रही हैं, सहानुभूति भी प्रकट हो रही है। लेकिन निजी स्वामित्व के विसर्जन के इस आंदोलन के प्रति जो पूर्वग्रह चला आ रहा है, उसने तो इस नयी सहानुभूति के बदले अधिक ही नुकसान पहुँचाया है। ऐसी हालत में अधिकारी-वर्ग सहकार के लिए गाँववालों को कैसे प्रेरित करेंगे? उड़ीसा की ही मिसाल लीजिये, जहाँ ग्रामदानी गाँव आज करीब १७९२ हो गये हैं। पर जिले के कोऑपरेटिव विभाग के द्वारा यहाँ के तमाम ग्रामदानी गाँवों को लोन देने से इस बिना पर इनकार कर दिया जाता है कि चूँकि इन गाँवों में भूमि की निजी मालकियत समाप्त हो चुकी है, इसलिए ऐसी कोई सिक्युरिटी नहीं है, जिसके कि आधार पर लोन दिया जा सके!

साहूकारों ने भी जब देखा कि अपनी सैकड़ों सालों की शोषण-परंपरा खत्म हो रही है, तो वे भी इसी प्रकार बर्ताव कर रहे हैं! इस तरह समाज और शासन के संबंधित-स्वार्थ (वेस्टेड इंटरेस्ट) वाले ग्रामदानी गाँवों के लोगों को मानों एक तरह से उस अच्छी चीज की सजा ही दे रहे हैं, जो उन्होंने स्वेच्छया की है!

सन् '५६ में संशोधित भूदान-कानून राष्ट्रपति की स्वीकृति से लागू भी हुआ, लेकिन फिर भी उसके कोई नियम-उपनियम आदि नहीं बन पाये हैं, जिससे कि उस कानून से लाभ उठाया जा सके। परिणामस्वरूप ग्रामदानी गाँवों की बड़ी कसौटी हो रही है। चूँकि कानून से ग्रामदान संमत नहीं हुआ है, इसलिए संबंधित स्वार्थवाले (इंटरेस्टेड पार्टीज़) रेवेन्यू आदि के बारे में भी लगातार बाधाएँ खड़ी कर रहे हैं।

यहाँ तक कि ग्रामदानी गाँवों के सैकड़ों ग्रामीणों पर, साहूकारों और पुलिस के मेल के कारण, मुकदमे भी चलाये जा रहे हैं। इंडियन पीनल कोड के सेक्शन १०७ और १५७ का निर्लज्जतापूर्वक उपयोग किया जा रहा है, जब कि मामला सौ प्रतिशत सिविल रहता है! दुर्भाग्य यह है कि अदालत में गरीब आदिवासियों के मुकाबले आदिवासियों के शोषक-साहूकारों का ही सरकार द्वारा बचाव होता है!

क्या समाजवादी पद्धति की कसौटी पर ये सब बातें ठीक उतरती हैं? अगर इस तरह ग्रामदान के प्रयोग को असफल करने का प्रयत्न किया जाता है, तो क्या उसका परिणाम जनतंत्र के असफल होने में भी नहीं होगा?

जो ईमानदारी से ग्रामदानी गाँवों में कोऑपरेटिव फार्मिंग करना चाहते हैं, उन्हें, ऐसी हालत में, इस बात पर गौर करना चाहिए कि चंद उच्चाधिकारियों या जिलाधिकारियों को वे मौका न दें कि समाजवाद के सहयोग के इस अद्भुत प्रयोग को कोई धक्का लगाये। साथ ही कानूनी सुविधाएँ भी मिल जानी चाहिए, अन्यथा जो चीज प्रेम से प्राप्त हुई, वह कानून से समाप्त हो जायगी!

—अंग्रेजी से

www.vinoba.in

भूदान-यज्ञ
१९ जुलाई सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

बल कैसे बढ़ता है ?

(वीनोबा)

महाभारत में व्यास भगवान् ने कहा है: "असंतोषः श्रीयोमूलः" –असंतोष लक्ष्मी का मूल है। असंतोष होता है, तब मनुष्य श्रम करता है, काम करता है और लक्ष्मी प्राप्त करता है। पर हृदय के अंदर असंतोष है और काम करने का मार्ग नहीं मीलता है, तो असंतोष बेकार हो जाता है। वह वाणी के जरीये प्रकट तो होता है, पर क्रीया के जरीये नहीं, क्योंकी मार्ग नहीं मीलता। मार्ग नहीं मीला, तो साक्षात् क्रीया कैसे होगी ? फीर चर्चा, वाद, राजनैतीक पक्षों के झगड़े, अीस तरह सारा वाचीक कार्य चलता है और अीस हालत में ताकत ही पैदा नहीं होती।

अंजीन ट्रेन को वेग से खींच कर ले जाता है। अुसमें भाप की शक्ती है। पर भाप अगर बाहर हवा में नीकल जाय, तो अुसमें क्या ताकत बचेगी ? वह अंदर रुकती है, अीसलीअे शक्ती पैदा होती है। तो, असंतोष को जब दील के अंदर रोकते हैं, तब ताकत पैदा होती है। वाणी से वह प्रकट हुआ, तो परीणाम शून्य ! अीसलीअे असंतोष को अंदर दबाना चाहीअे, फीर पांव–हाथ में ज़ोर आता है। चीत्त में असंतोष है, तो पांव कभी नहीं थकेंगे। बाबा के चीत्त में अपने लीअे तो पूर्ण शांती और समाधान है, लेकीन समाज की हालत से असंतोष है। पर बाबा को मार्ग मील गया, अीस वास्ते असंतोष वाणी से प्रकट नहीं होता और भाप अंदर है, खूब जोर आता है। लोग प्रोटेस्ट–प्रस्ताव करते हैं, मीटींग करते हैं। पर अुससे क्या होता है ? कहते हैं, मील-मालीक मज़दूरों का शोषण करते हैं, अीसलीअे अुनका वीरोध करना चाहीअे ! परंतु, वही शख्स कपड़ा तो पहनता है मील का ही ! बाबा न तो गाली देता है और न मील का कपड़ा ही पहनता है ! हींदुस्तान के लोग मील का कपड़ा नहीं पहनेंगे, तो मीलवाला भी शरण आयेगा और हमारे हाथ में मीलें आ जायेंगी। पर आज कपड़ा खरीद कर गाली देते हैं, तो अुसका असर ही नहीं होता। मीलवालों का सच्चा दुश्मन है बाबा। यद्यपी वह मीठा बोलता है, पर काम अैसा करता है की मीलवालों की जड़ ही अुखड़ जाय ! लेकीन लोग खादी की ताक़त पैदा नहीं करते, मील को ही जोर पहुंचाते हैं। मतलब यह की ताकत बोलने से नहीं पैदा होती ! नीषेध या गाली से तो बल का क्षय होता है और अंदर बल का संचार भी नहीं होता है।

(वेल्लनेली, पालघाट, १३-६-'५७)

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी, ख = ख, संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से।

सर्वोदय की दृष्टि :

राष्ट्रों की भूख-हड़ताल !

कोलम्बो में किसी एक भारतीय महिला ने सुझाया कि ऐटम बम का निषेध तो हम कर चुके, अब बम बनाने वाले राष्ट्रों को रोकने का इलाज क्या है, यही सोचना चाहिए। इतनी प्रस्तावना करने के बाद उसने कहा कि मैं एक गांधीवादी महिला हूँ। मेरा सुझाव है कि हम भूख-हड़ताल करें। गांधीजी का यह तरीका जरूर आजमाना चाहिए !

आन्तर्राष्ट्रीय परिषदों में भारतीय सदस्यों की कुछ विशेष इज्जत होती है। इसलिए उक्त महिला के सुझाव पर किसीने कुछ कहा नहीं, पर मन में लोग हँसे होंगे कि एक या दस-बीस आदमियों की भूख-हड़ताल से क्या होने वाला है ?

सभा के बाहर जब खानगी चर्चा चली, तब मैंने भूख-हड़ताल की सूचना को नया ही रूप दिया। तब चन्द लोग कहने लगे कि इस अर्थ में यह सूचना विचारणीय है सही !

मैंने कहा कि भूख-हड़ताल का अर्थ है कि जो पक्ष न्याय का है, वह अन्याय का निषेध करने के लिए अपने जीने का साधन ही छोड़ दे, मरने की तैयारी बताये। जब कोई पक्ष अपनी जान खतरे में डाल कर बातें करता है, तब उसकी बातों की ओर दुनिया को ध्यान देना ही पड़ता है। जिस तरह कोर्ट-फी लगा कर अर्जी करने से न्यायाधीश को अर्जी सुननी ही पड़ती है, उसी तरह जब आदमी अपने प्राण की बाजी लगा कर कोई सुझाव रखता है, तब प्रतिपक्षी को अपनी जिद भूल कर अपना हृदय जाग्रत करना पड़ता है।

मैं नहीं मानता कि आज की दुनिया में कोई गांधीजी के जैसा प्रभावी पवित्र पुरुष है, जिसके अनशन से रशिया या अमेरिका की सरकारों का हृदय-परिवर्तन हो सके। लेकिन भूख-हड़ताल का ऐसा एक नया रूप हम चला सकते हैं कि जैसे, दुनिया के अनेक छोटे-मोटे राष्ट्र जीने के लिए और प्रगति करने के लिए अमेरिका, रशिया और ब्रिटेन जैसे बड़े राष्ट्रों से आर्थिक और अन्य प्रकार की सहायता लेते हैं। जीने के लिए और प्रगति करने के लिए यह सहायता इन छोटे-बड़े राष्ट्रों के लिए बहुत ही जरूरी है। **अब दुनिया के सब राष्ट्र इकट्ठा होकर अगर निश्चय कर सकें कि आज से हम ऐसी सब सहायता छोड़ देते हैं, तो वह सचमुच एक विराट् भूख-हड़ताल होगी और ऐसी हड़ताल का असर भी आर्थिक जगत् पर कम नहीं होगा।** कोई एक राष्ट्र सहायता लेने से इन्कार करे, तो भी उसका नैतिक असर तो जरूर होगा। लेकिन सबके-सब राष्ट्र अगर सम्मिलित होकर सहायता का त्याग करें, तो विनाशकारी राष्ट्रों को तुरन्त सोचना ही पड़ेगा।

("मंगल प्रभात" से) —काका कालेलकर

संविभाग और सज्जनता की राह

मेक्सिको के स्वतंत्रता-आंदोलन के संचालक "सायमन बोलीवर" ने कहा था "There have been only three great fools in the world: Jesus, Don Quixote and I—**इस दुनिया में ये तीन महान् मूर्ख हैं :** पहला जीसस, दूसरा डॉन क्विक्ज़ोट और तीसरा मैं स्वयं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि मेक्सिको के जंगली लोगों में भी स्वतंत्रता की पात्रता है और वह पात्रता भी उतनी ही है, जितनी कि मेरी है !"

यह मूलभूत निष्ठा उसमें थी। इसे "Sharing life" याने जीवन का विनियोग कहते हैं। यही समर्पण-योग कहलाता है, जिसे मैंने समत्वयोग भी कहा है।

जीवन का विनियोग अलग है और जीवन-मात्र पर सत्ता चलाना अलग है। एक ईसा का और एक सिकंदर का रास्ता है। One is the way of possesion और It is the way of submission. एक प्रभुत्व का, तो दूसरा 'समर्पण' का रास्ता है; एक सत्ता का, तो दूसरा प्रेम का मार्ग है। अलेक्ज़ांडर का मार्ग 'having everything'-सब पर अधिकार जमाने का है और ईसा का रास्ता 'Becoming everything–' सबको अपने जीवन में शामिल करने और सबके जीवन में स्वयं शामिल हो जाने का है।

यही संविभाग का और यही सज्जनता का मार्ग है।

("भूमिपुत्र" से) —— —दादा धर्माधिकारी

www.vinoba.in

प्रश्नोत्तरी : १.

सर्वोदय-क्रांति प्रगति-पथ पर है या पीछे हट रही है ?

(धीरेन्द्र मजूमदार)

प्रश्न : आपने यह कहा है कि सर्वोदय-क्रांति की प्रगति पहले से आज ज्यादह है। लेकिन पहले क्रांति का जैसा उफान दिखायी देता था, वैसा आज नहीं है। ऐसे ठंढे-ठंढे भी कहीं क्रांति होती है ?

उत्तर : शुरू में जो दिखायी देता था, वह क्रांति का उफान नहीं था। वह नयापन का चमत्कार था। जब कभी कोई चीज नयी होती है, तो उसकी ओर आदमी की नजर स्वभावतः चली जाती है। फिर कुछ दिन के बाद जब नयापन हट जाता है, तो उसे देखने की उत्सुकता नहीं रह जाती। इसलिए तीन-चार साल पहले लोगों में हमारे काम को देखने की कितनी उत्सुकता थी और आज वह कितनी है, इसका मिलान करने से क्रांति की प्रगति का अन्दाज नहीं लगेगा। क्रांति के विचार को तीन-चार साल पहले कितने लोग समझते थे, समझने की कोशिश करते थे और उसे मान्य करते थे तथा आज वे उसे कितना मान्य करते हैं, इसके मिलान से ही क्रांति की प्रगति आँकी जा सकती है। जिस क्षेत्र में तीन-चार साल पहले भूदान का काम चलता था, वहाँ की जनता इतना ही समझती थी कि कोई संत है, गरीबों के लिए वह जमीन माँगता है, उसे जमीन दो और उसका दर्शन करो। यद्यपि यह आकर्षण मूलतः इस आन्दोलन के क्रांतिकारी पहलुओं के कारण ही था। पर हम लोग जब घूमते थे, तो हमसे कोई क्रांति की चर्चा भी नहीं करता था। लेकिन आज जिस क्षेत्र में भूदान का काम चलता है और जिस क्षेत्र में नहीं चलता है, वहाँ हम जब जाते हैं, तो लोग हमसे इसी वैचारिक भूमिका में चर्चा करते हैं। पहले अखबारों में विनोबा के कार्यक्रम की खबरें मोटे अक्षरों में छपती थीं। आज वे उतनी नहीं छपती हैं। लेकिन आज अखबारों में भू-क्रांति, ग्रामदान, सर्वोदय-समाज-रचना आदि विषयों के पक्ष और विपक्ष में लोग लेख लिखते हैं और सम्पादक लोग इस विषय पर चर्चा करते हैं। साहित्य की बिक्री भी आप देखेंगे, तो आपको यह फर्क स्पष्ट नजर आयेगा।

इन तमाम बातों से आपकी समझ में आ जायगा कि क्रांति की प्रक्रिया ठप नहीं पड़ गयी है, बल्कि उसकी प्रगति ही हुई है।

प्रश्न : ऐसी प्रगति तो सरकार की पंचवर्षीय योजनाओं की भी है। क्रांति की प्रक्रिया में तो एक उफान होता है और उसके नतीजे से उसकी स्थापना होती है। इस बात का लक्षण आपकी कथित प्रगति में नहीं दिखायी देता है। तब आप इसे क्रांति कैसे कहते हैं ?

उत्तर : सरकारी पंचवर्षीय योजना की प्रगति समाज की पद्धति बदलने की पद्धति नहीं है। इसीलिए उसकी मिसाल यहाँ काम नहीं देगी। ऐसे तो कोई यह भी मिसाल पेश कर सकता है कि युद्ध की तैयारी की भी तो प्रगति हो रही है। वस्तुतः ऐसा प्रश्न क्रांति की गलत धारणा के कारण होता है। यह सही है कि इसके लिए आप दोषी नहीं हैं। पुराने जमाने से आज तक लोगों ने क्रांति की ऐसी ही धारणा बना रखी है। वस्तुतः क्रांति कोई घटना नहीं है। युद्ध घटना हो सकता है, क्योंकि उसमें एक मर्यादित चीज को हासिल करना होता है और उसके लिए एक क्षणिक उफान काफी है। राष्ट्र-विप्लव भी घटना हो सकता है, जैसे जो लोग सरकार चलाते हैं, उनसे ऊब कर देश की जनता ने विद्रोह किया और उन्हें खत्म करके दूसरे लोगों को उनके स्थान पर बैठाया एवं फिर दूसरे लोग अच्छी तरह से वह सरकार चलाने लगे। भारतीय स्वतंत्रता की प्राप्ति भी एक घटना थी और उसके लिए सन् '४२ में एक उफान हुआ। अंग्रेज गये और हम लोग देश का काम-काज चलाने लगे। सत्ता के बारे में विचार-परिवर्तन की कोई बात ही नहीं थी। लेकिन क्रांति इस प्रकार की चीज नहीं है कि उसके लिए कोई उफान हो, वह पूरी हो जाय तथा लोग निश्चिंत हो जायँ। क्रांति समाज की एक प्रक्रिया है। समाज की प्रगति के लिए मनुष्य विभिन्न प्रकार की पद्धतियों का आविष्कार करता है, ताकि समाज चले। वह पद्धति बाद में प्रगति के लिए नाकाफी होती है। इतना ही नहीं, आगे की प्रगति के लिए भी वह रुकावट साबित होती है। ऐसे समय पुरानी मान्यताओं को बदल कर नयी मान्यताओं को स्वीकार करना होता है और वही क्रांति है। ऐसी मान्यता समस्त मानव की आंतरिक वस्तु है। फिर वह एक प्रक्रिया हो जाती है, किसी एक समय की घटना नहीं। इसलिए विनोबाजी ने क्रांति का नाम आरोहण रखा है।

अतएव आपको यह देखना है कि देश और दुनिया के लोगों के विचार पिछले ६ साल से आपके विचार की ओर निरन्तर तथा द्रुत गति से आकर्षित हो रहे हैं या नहीं ? आपको यह भी देखना है कि सत्ता और सम्पत्ति के बारे में लोगों की मान्यता पर आपके विचार का असर निरन्तर पड़ रहा है या नहीं। जमीन के बारे में लोगों की आज की धारणा क्या है और पहले क्या थी, इसे भी आप मिलान करें। छठा हिस्सा भूदान से बढ़कर आज आप ग्रामदान के विचार तक पहुँचे हैं। इस बारे में आम तौर से लोगों पर क्या प्रतिक्रिया है, इसे भी आप देखें। तब आपको मालूम होगा कि भू-क्रांति का क्रांतिकारी पहलू आज जिस प्रकार से समाज के अन्दर फैल रहा है, उस तरह उन दिनों में नहीं फैल रहा था, जिन दिनों, आप समझते हैं कि, इस क्रांति की प्रगति उच्च शिखर पर थी ! (असमाप्त)

सर्वोदय में सबको लीन होना है !

प्रश्न : एक प्रवचन में आपने सोशियालिज्म को गंगा और कम्युनिज्म को यमुना कहा है। उधर लक्ष्य और मार्ग शुद्ध होना ही चाहिए, ऐसा आप आग्रह रखते हैं, तब उपर्युक्त बातों का न्यायीकरण आप किस तरह कर सकते हैं ?

विनोबा : हम नहीं जानते कि कौन गंगा है और कौन यमुना। इतना ही जानते हैं कि सर्वोदय समुद्र है और सब नदियाँ इसमें मिलने वाली हैं। यही हमने कहा था। शायद अखबारों में गलत रिपोर्ट की गयी हो। यह भी कहा था कि गंगा-यमुना की तरह नदियाँ आपस-आपस में मिल कर बाद में समुद्र में आयेंगी। परंतु कृष्णा-गोदावरी की तरह अलग रहीं, तो भी उन्हें समुद्र में तो लीन होना ही है, यह निश्चित है।

हिंदुस्तान में जितने भी पक्ष हैं, उनमें कुछ अच्छे लोग हैं, कुछ अच्छे विचार हैं और कुछ खराब लोग हैं और कुछ गलत विचार। नालों में पानी होता है, साथ-साथ मैल भी होता है। इसी प्रकार राजनैतिक पार्टियाँ हैं। उनमें कुछ अच्छे विचार हैं, कुछ गलत। हम उसकी चिंता नहीं करते। हम इतना ही जानते हैं कि उनमें पानी है और हम हैं समुद्र, और समुद्र किसीको यह नहीं कह सकता कि **तुम नदी हो, तो ही आओ, नाला हो, तो मत आओ !** सब लोग चाहते हैं, भारत का भला ही हो। हमारा विश्वास है कि भारत का भला सर्वोदय-विचार के बिना नहीं होगा। इसलिए सब पार्टियों को सर्वोदय में आना ही होगा। हम तो सबको खाने के लिए बैठे हैं ! संतरा खाते हैं, तो सार लेते हैं और असार थूक देते हैं ! वैसे ही हम सार ग्रहण करते हैं। उनमें जो सार है, वह सर्वोदय ही है।

सर्वोदय में हम सबका भला देखते हैं। कम्युनिस्ट लोग जनता के एक हिस्से का भला देखते हैं। उस दृष्टि से कम्युनिज्म और कम्युनलिज्म में फरक नहीं है ! मुसलमान वादी मुसलमानों का हित, हिंदू वादी हिंदुओं का हित चाहते हैं, मूढ़ों को मालूम नहीं कि हिंदू-मुसलमानों का इंटरेस्ट एक-दूसरे के विरोध में नहीं है। वैसे ही ये लोग गरीब और अमीरों का इंटरेस्ट परस्पर के विरोध में मानते हैं। क्या हमारे दो हाथों में या हाथों की अंगुलियों में से किसी एक का 'इंटरेस्ट' दूसरे के विरोध में है ? वस्तुतः सहयोग के बिना काम होता ही नहीं। इसलिए सबको समान प्लैटफार्म पर लाना होगा, सबकी एक आवाज उठानी होगी।

किसी घर को आग लगी, तो सब दौड़ जाते हैं बुझाने के लिए—चाहे वे किसी भी धर्म के, जाति के या पार्टी के हों, क्योंकि वैसा न करें, तो सर्वनाश होगा। सर्वोदय का काम भी वैसा ही है। वह सबको करना पड़ेगा—चाहे वह किसी भी पार्टी या धर्म का हो। चाहे गंगा हो, चाहे यमुना या नाला हो, उसको सर्वोदय में लीन होना ही है। यही हमने उस दिन कहा था।

(कुटीपुरम्, कोलीकोड, २४-६-'५७)

---

www.vinoba.in

तमिलनाड़ की चिट्ठी

(एस० जगन्नाथन्)

वितरण : सर्वोदय-संमेलन, काळडी में एकत्रित भूदान-कार्यकर्ताओं ने तय किया था कि १५ अगस्त को एक निश्चित तारीख पर प्राप्त भूमि का वितरण कर दिया जाय। तदनुसार त्रिचुर, मदुराई, रामनद और तिरुनेलवेली जिलों में मीटिंगें हुईं, तालुकावार दान-पत्र छाँट कर दे दिये गये और तालुकों की कमेटियों और प्रतिनिधियों ने अपने यहाँ के वितरण का जिम्मा भी उठा लिया। वे भी फिरकेवार इसकी व्यवस्था करेंगे। सेलम जिले की भी व्यवस्था हो रही है।

निर्माण : हमारे सौभाग्य से वेसिक ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल, नयी तालीम के विशेषज्ञ, प्रो० के० अरुणाचलम् ने, जो सारे प्रांत के लिए आदरणीय व प्रिय हैं, अपना पद छोड़ कर सारी सेवाएँ भूदान-आंदोलन में अर्पण कर दी हैं। इसके पूर्व भी वे एक साल पूरा भूदान के लिए दे चुके थे। उनके त्याग ने कार्यकर्ताओं में प्रेरणा भर दी है। सर्वोदय-मंडल के वे मार्गदर्शक हैं। भूदान-समितियों का विसर्जन हुआ और निर्माण-काम का प्रारंभ; ऐसे समय उनका हमारे बीच आना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ग्रामदानी गाँवों में सरकारी या गैरसरकारी रूप से जो भी निर्माण-कार्य होता है, उसका मार्गदर्शन सर्वोदय-मंडल ही करता है और प्रो० अरुणाचलम् उस निर्माण-कार्य-विभाग के प्रमुख बनाये गये हैं, यद्यपि वे अन्य काम भी देखते हैं।

तमिलनाड-गांधी-निधि और सर्व-सेवा-संघ ने अपने कार्यकर्ता भी ग्रामदानी गाँवों में दे दिये हैं। छह निधि-कार्यकर्ता नेल्लूर तालुका में बस गये हैं और दस संघ-कार्यकर्ता तिरुमंगलम् के ग्रामदानी गाँवों में। अंबर-परिश्रमालय भी दोनों जगह चालू हो गये हैं। सर्वोदय-मंडल ने तीन समस्याएँ सरकार के सामने, ग्रामदानी गाँवों के संबंध में प्रस्तुत की हैं : (१) निजी साहूकारों ने और सहकारी-समितियों ने तमाम आर्थिक सुविधाएँ अचानक बन्द कर दीं। सर्वोदय-मंडल ने सरकार से प्रार्थना की कि जुलाई तक उसे अर्थिक सहायता दी जाय, ताकि खेती का काम शुरू हो। बड़ी सहानुभूतिपूर्वक सरकार ने यह स्वीकार कर लिया और बीस लाख रुपये मंजूर किये। (२) अपना कर्ज ग्रामदानी गाँवों के कर्जदारों से वापस मिले, इसके लिए साहूकारों ने तकाजा शुरू किया, तो सर्वोदय-मंडल ने सरकार के सामने योजना प्रस्तुत की कि ग्रामदानी गाँवों के लिए ऋण देने वाली या पूर्व ऋण-निवारक संस्था खड़ी करें और (३) निर्माण और विकास के लिए १ करोड़ रुपयों की सुविधा कर दे।

मद्रास-सरकार आखिर की इन दोनों बातों के बारे में भी सोच रही है।

सर्वोदय-पंचायतें : खेती के कामों के लिए सरकार द्वारा कर्ज दिये जाने के पहले ही सर्वोदय-मंडल ने तय किया कि सर्वोदय-पंचायतें कायम की जायँ। विनोबाजी के मार्गदर्शन से ग्राम-महासभाओं का निर्माण हुआ, जिसमें हरेक परिवार से एक सदस्य लिया गया। यही सभा जरूरत के अनुसार ५ या ९ सदस्यों की सर्वसम्मति से एक सर्वोदय-पंचायत चुनेगी। ऐसी ग्रामसभाएँ और पंचायतें मदुरा जिले के करीब १० ग्रामदानी गाँवों में कायम हो गयी हैं। तमाम जिला-कार्यकर्ता जून माह में यह काम करते रहे।

मई और जून में मंडल की ठकें होती रहीं। उसने मद्रास राज्य के भूदान-ग्रामदान-कानून का मसविदा तैयार किया और सरकार के पास भेजा। वह शीघ्र ही लागू होगा। मंडल ने "सर्वोदय-सहकारी-समितियों" के निर्माण का मसविदा, जो मद्रास-सरकार के कोऑपरेटिव सोसायटीज़ के रजिस्ट्रार द्वारा बनाया गया, देखा और अपनी राय के साथ वापस सरकार के पास भेजा।

भूदान-ग्रामदान-आंदोलन : भूदान-समितियाँ विसर्जित हुईं और निधि से सहायता लेना बंद हुआ। फिर भी जब तक विनोबाजी हमारे बीच थे, कोई खास दिक्कत महसूस नहीं हुई। लेकिन उनके जाने के बाद हमने बड़ा अकेलापन महसूस किया। स्वभावतः इस स्थिति से संभलने में देर लगी। करीब १ साल विनोबाजी हम लोगों के बीच रहे और हममें उन्होंने प्राण-संचार किया। उनके जाने के बाद से मदुरा, रामनद और तिरुनेलवेली जिलों को छोड़ कर शेष जगह काम की स्थिति अभी जैसी की तैसी है।

संपत्तिदान : संगठन और आंदोलन के लिए इसका उपयोग बड़ा कठिन काम है। मदुरा जिले के संपत्तिदानी एक बार एकत्रित भी हुए और अधिक दान प्राप्त करने की कोशिश हुई, लेकिन बहुत प्रगति नहीं हुई। पर सर्वोदय-मंडल इस दृष्टि से मदुराई जिले के संगठन की योजना बना रहा है। उसी तरह दूसरे जिलों में भी कोशिश कर रहा है।

तालुका-दान : जून में तिरुमंगलम् में "वालंगाकुलम्" और "कावेट्टिनै केम्पट्टी" ये दो गाँव मिले। अभी इस काम का सिलसिला फिर से शुरू नहीं हुआ है, क्योंकि गाँव-गाँव में पंचायतों की स्थापना में लोग लग गये थे। जुलाई से फिर यह शुरू होगा। सर्वोदय-मंडल का दफ्तर गांधी-निकेतन, कल्लुपट्टी में बाजाप्ता शुरू हो गया है। यहाँ और भी पाँच-छह रचनात्मक संस्थाएँ हैं। मंडल जिले का आंदोलन-कार्य और लोकसेवकों के बीच की कड़ी के रूप में काम करेगा और सलाह, नैतिक सहायताएँ आदि भी देगा।

(अंग्रेजी से)

इलाहाबाद जिले का एक अनोखा शिविर !

(सुरेश रामभाई)

मेरे मन कछु और है, विधना के कछु और !

गत फरवरी और मार्च में भू-क्रान्ति का सन्देश लेकर हम कुछ कार्यकर्ता, इलाहाबाद ज़िले के देहातों में चलने वाले सभी स्तर के पैंसठ विद्यालयों में पहुँचे थे। बड़े प्रेम और ध्यान से विद्यार्थियों ने उस संदेश को सुना और लगभग पौने चार हजार विद्यार्थियों ने गर्मियों की छुट्टियों में इस क्रान्ति में अपना समय देने के लिए नाम दिये। पन्द्रह मई के बाद से समय लेने की बात थी, क्योंकि चौदह मई को ही विद्यालय बंद होते थे। परंतु मई में संमेलन से ही हम तीसरे हफ्ते लौटे और शेष चार-छः दिनों में पू. दादा धर्माधिकारी एवं श्री बंगजी के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम नगर में रहे, जिनमें ये चंद दिन बीत गये। इस तरह मई मास पूरा हुआ।

जिन विद्यार्थियों ने हमें नाम दिये थे, उनमें से लगभग बारह सौ बड़े विद्यार्थी ऐसे थे, जो नवीं-दसवीं, ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षाओं में पढ़ते थे। बाकी ढाई हजार छठीं, सातवीं, आठवीं में। प्रोफेसर बंग की सलाह से यह तय पाया कि पदयात्रा की जो टोलियाँ निकलें, वह बड़े विद्यार्थियों की हों, ताकि वे अच्छी तरह से विचार समझा सकें। ऊपर से बंगजी ने स्पष्ट कहा कि हर टोली के साथ एक-एक प्रौढ़ कार्यकर्ता ज़रूर रहना चाहिए। यानी जितने कार्यकर्ता, उतनी टोलियाँ। सवाल उठा कि कार्यकर्ता कैसे जुटाये जायें। इसका एक ही उपाय है—पदयात्रा और प्रचार। इसलिए यह तय किया गया कि क्षेत्र में घूम कर कार्यकर्ता बुलाये जायँ और इस बीच विद्यार्थियों को पत्र भेज दिये जायँ।

जून की पाँचवीं-छठीं-सातवीं तारीखों में ये पत्र भेज दिये गये। शिविर की तारीखें १८-१९ रखी गयीं, २० से २६ तक पदयात्रा और २७ को अन्तिम समारोह। शिविर का स्थान तय करने में भी तीन-चार दिन लग गये, क्योंकि ढाई सौ-तीन-सौ (आशा यही की गयी थी कि बारह सौ में से पचीस प्रतिशत भाई आ पायेंगे।) विद्यार्थियों के रहने-खाने का सवाल आसान नहीं है। हमने क्षेत्र चुना था इलाहाबाद ज़िले की मेंजा तहसील। कई गाँव गये, श्रीमानों से मिले, पर किसीने हामी नहीं भरी। कठौली नाम का एक बड़ा गाँव है। वहाँ गये। रात को सभा की। सुबह उठे, तो किसीने कोई खबर नहीं ली। वहाँ से भी चल दिये। फिर आये कठौली की हरिजन-बस्ती में, जो गड़ेबड़ा ग्राम कहलाता है। वहाँ पर कठौली के एक प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता और भूतपूर्व ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, श्री जगन्नाथ सिंह का पक्का मकान है। उन्होंने वह मकान इस काम के लिए हमें दिया। अब रहा खाने का सवाल। तो वह भार हरिजन-बन्धुओं ने सँभालने का तय किया : हर घर में दो-दो, चार-चार जन जाकर भोजन कर लेंगे, कोई दिक्कत नहीं होगी।

सत्रह तारीख की दोपहर से शिविरार्थी आना शुरू हो गये। शाम तक लगभग बीस आ गये। रात का भोजन एक हरिजन बन्धु, श्री भूमिधर के द्वार पर ही हुआ। उनके घर पर ही सबका भोजन बना था। खाना खाकर सब सो गये।

अठारह की सुबह। प्रार्थना हुई और फिर कानाफूसी शुरू! सवाल पूछा गया कि "चमारन के घरे" भोजन क्यों कराया गया ? हमने कहा कि इस पर चर्चा आठ बजे बाद बौद्धिक वर्ग में चलेगी। तब तक लगभग चालीस विद्यार्थी हो गये थे। शिविर में इलाहाबाद जिले के दो प्रमुख श्रीमान्, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह (राजा बहादुर मांडा) और श्री सन्त बख्श सिंह (कुँवर साहब डैया) भी मौजूद थे। भोजन के प्रश्न पर हमारे अनन्य साथी, जिन्हें कोई चाचा, कोई दादा कहता है, श्री लल्लू सिंह और मैंने विस्तार से रोशनी डाली। लगभग दो घंटे

www.vinoba.in

लगे। चर्चा की समाप्ति पर हमने कहा कि जिन विद्यार्थियों को हरिजन-बन्धुओं के घर में मेहमानदारी क़बूल न हो और वापस जाना चाहते हों, हाथ उठालें।' किसीने नहीं उठाया। 'जो रहना चाहते हों, वे अपना अपना नाम लिखायें'–तो एक के बाद एक ने नाम बोलना शुरू किया। कोई पाँच विद्यार्थी चुप रहे। उन्होंने न तो जाने के लिए हाथ उठाया, न रहने के लिए नाम लिखाया। मगर हुआ क्या कि जिन्होंने नाम लिखाये थे, वे भी खिसकने लगे! कुछ ने दोपहर को भोजन किया और फिर चले गये! दिन में और भाई आये, वे भी चले गये। इस तरह लोग आते गये, जाते गये। जाने वालों ने प्रचार करना शुरू किया और सड़क, स्टेशन, मोटर-बस के अड्डों पर जो भी नया विद्यार्थी उन्हें मिलता, उससे कहते—कहाँ जा रहे हो, लौट चलो, नहीं तो "चमरौटी" में खाना पड़ेगा!

कुल मिला कर शायद सवा सौ विद्यार्थी आये होंगे। इनमें से सौ के ऊपर वापिस लौट गये। केवल बारह विद्यार्थी उन्नीस तारीख की सुबह को बचे!! वयोवृद्ध विचारक और लेखक, श्री भगवानदासजी केला ने उन्हें आशीर्वाद दिया और श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह (राजा बहादुर मांडा) ने उनके माथे पर तिलक लगा कर उन्हें विदा किया। बारह विद्यार्थी और चार प्रौढ़ कार्यकर्ता—सोलह पदयात्री चार टोलियों में बीस तारीख की सुबह को निकल पड़े।

बारह सौ से सवा सौ!! और सवा सौ से बारह!!!

लेकिन २६ तारीख की शाम को जब ये बारह भाई वापिस लौटे, तो ऐसा लगता था, मानो वीर चले आ रहे हों! हर चेहरे पर आत्म-विश्वास और अंतः-समाधान की चमक थी और एक अनोखी मुसकान छिटक रही थी। सत्ताईस की सुबह को इनमें से हर एक ने अपने अनुभव सुनाये।

तीसरे पहर को एक सार्वजनिक सभा के रूप में अन्तिम समारोह हुआ। इसकी अध्यक्षता राजा बहादुर मांडा ने ही की। सूत्रयज्ञ और रामधुन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। फिर शिविर-व्यवस्थापक श्री देवतादीन मिश्र ने शिविर की पूरी जानकारी दी। इसके बाद चार विद्यार्थियों ने अपने अनुभव जनता के आगे रखे। इन्होंने बताया कि हमें दरिद्रनारायण का दर्शन मिला और हमने यह सीखा कि सच्चा व्यवहार क्या है और अपने विचारों को किस तरह व्यक्त किया जाता है। हमारे मित्र श्री जगन्नाथ सिंह ने कहा कि सर्वोदय हम सबको बचाने के लिए है। यह शंका निराधार है कि भूमि पाने पर हरिजन-हरवाहे हमारे खेतों पर काम नहीं करेंगे। वे जरूर करेंगे, पर हमें भी साथ में लगना होगा।

गड़ेवड़ा गाँव के हरिजन-निवासी, श्री स्वयंबर ने कहा कि शिविर से हमारी तो आँखें खुल गईं। हम जानते हैं कि छोटे-बड़ों के मेल के बिना काम नहीं चल सकता। इसलिए जब बड़े लोग हमें अपनायेंगे, तभी हम उनके सच्चे सेवक बन सकेंगे।

जीवनदानी कार्यकर्ता श्री राघव शुक्ल ने सबके सामने क्षमा-याचना की और कहा कि जाने-अनजाने हमसे पिछले तीन बरस में जो दोष हुए, उनका हमें दुःख है। हम उसके लिए माफ़ी चाहते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि अपना पूरा समय इसी क्रान्ति में देंगे। फिर हमारे दादा (श्री लल्लू सिंह) ने कठौली के निवासियों से निवेदन किया कि सर्वोदय-विचार को ग्रहण कर उसके अनुकूल ग्रामराज की स्थापना करें। इसके बाद, सभा के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, राजा बहादुर मांडा का व्याख्यान हुआ। पिछले अंक में वह आया है।

अंत में हमने राजा बहादुर को धन्यवाद देते हुए कहा कि श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपने महान् त्याग से जो मार्गदर्शन इलाहाबाद ज़िले के श्रीमानों का किया है, उससे एक ऐसी नयी ज्योति पैदा होगी, जो ज़िले में ग्रामदान की क्रान्ति को सम्पन्न करेगी। हमें आशा और विश्वास है कि हमारे ज़िले के श्रीमान् ज़माने का इशारा समझेंगे और राजा मांडा की तरह विशाल हृदय के साथ ग्रामराज की स्थापना में पूरा सहयोग देंगे। प्रार्थना के साथ सभा का कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस प्रकार इस शिविर में हमें इलाहाबाद जिले के दुःखी से दुःखी हरिजन, भूमिहीन बन्धुओं और जिले के सबसे बड़े श्रीमान्, राजा बहादुर मांडा–दरिद्रनारायण और लक्ष्मीनारायण—दोनों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इसके लिए हमारी लायकी नहीं, बुद्धि नहीं, शक्ति नहीं।

भक्तिभाव के साथ यह सब कुछ कृष्णार्पण है, ब्रह्मार्पण है!

बाबा राघवदासजी की पावन यात्रा से—

(महेन्द्र कुमार)

सेंधवा कसबे से सात मील दूर कुंझरी नामक आदिवासी ग्राम में बाबा राघवदासजी ने कहा, "मैंने सुना है कि लोग ग्रामदान से भयभीत हैं! खास तौर पर व्यापारी, डॉक्टर और वकील लोग परेशान हैं, जिनके कि व्यवसाय आधुनिक समाज में शोषण पर आधारित हैं। पर ग्रामदान से किसीको भी डरने की या मन में किसी प्रकार के सन्देह की आवश्यकता नहीं है। भूदान गरीब और अमीर की सहायता से सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति करना चाहता है। गरीब की गरीबी और अमीर की अमीरी, दोनों ही समाज के लिए अभिशाप हैं। इसलिए भूदान-यज्ञ गरीबों और अमीरों को बचा कर गरीबी और अमीरी समाप्त करना चाहता है। यह सही है कि ग्रामदान में अनुत्पादक व्यवसाय, शोषक धन्धे तथा एक की मुसीबत दूसरे के लिए आमदनी एवं मौज के ऐसे साधन नहीं रहेंगे। पर ग्रामदान समाज के सभी पक्षों के लिए निर्भयता प्रदान करता है। प्रेम से होने वाले क्रान्ति की यही विशेषता है।"

विभिन्न विषयों पर बाबाजी का अध्ययन चलता रहता है और प्रातः पदयात्रा के समय पदयात्री-दल के साथियों को अपने अनुभव एवं अध्ययन के बारे में वे बताया करते हैं। उस रोज प्रार्थना-सभा में उन्होंने कहा, "हम अनुभव कर रहे हैं कि निमाड़ जिले में ग्रामदान की कोई समस्या ही नहीं है। यहाँ तो खूब ग्रामदान हो सकते हैं। पर यहाँ सुलझे हुए कार्यकर्ताओं का सर्वथा अभाव है। यही बात पूरे मध्यप्रदेश पर भी लागू हो सकती है। कार्यकर्ताओं के बीच आज कोई समन्वयकारी शक्ति नहीं है। कार्य के सातत्य एवं समन्वय के लिए ऐसी शक्ति की निहायत आवश्यकता है। यदि सभी कार्यकर्ता, जिनकी शक्ति विविध कार्यों में फँसे होने के कारण बँट गयी है, यदि सत्आवन वर्ष में ग्रामदान-आन्दोलन को बढ़ाने की आवश्यकता महसूस करें, तो मध्यप्रदेश में सैकड़ों ग्रामदान हो सकते हैं।

"दूसरी बात, रचनात्मक संस्थाओं ने अभी तक ग्रामदान-आन्दोलन की तीव्रता महसूस नहीं की है। रचनात्मक कार्यों का आधार ग्रामदान ही है। पिछले चालीस वर्षों में ग्रामोद्योगों द्वारा ग्राम-स्वावलंबन का प्रयोग हमने किया है, परन्तु अनुभव यह आया कि जब तक समाज की जड़ में व्यक्तिगत मालकियत और लोभ की भावना निहित है, वहाँ वह काम आगे बढ़ नहीं पाता।"

बाबाजी आजकल आदिवासी क्षेत्र में पदयात्रा कर रहे हैं। जहाँ भी वे जुल्म की करुण कहानियाँ सुनते हैं, उनका दिल भर आता है। जब उन्होंने सुना कि प्रायः हरेक आदिवासी परिवार कर्ज में डूबा है, तो उन्होंने कहा, "सरकार ने जन-जातियों के कल्याण के लिए एक मुहकमा खोल रखा है, परन्तु हम देखते हैं कि आज भी आदिवासियों की समस्याएँ वैसी ही बाकी हैं। सरकार की ओर से उनको पूरी सहायता मिलती, तो वे व्यापारियों और सूदखोरों के चंगुल में नहीं फँसते। आज तो व्यापारी की कुशलता के कारण वे लोग उन्हें अपना हितैषी और सलाहकार मानते हैं। आदिवासियों से हमारी प्रार्थना है कि वे अपने भले-बुरे को पहचानें। ग्रामदान आदिवासी जनता को सूदखोरों के चंगुल से बचा सकता है।"

पिपरी-वर्धा में जीवन-शिविर

सन् '५७ साल के लिए घर छोड़ कर क्रांति-कार्य में लगे हुए वर्धा जिले के ६५ कार्यकर्ताओं का शिविर ता० २२ जून से ३० जून तक पिपरी-वर्धा में हुआ। इसमें चांदा जिले के ७ सेवकों ने भी भाग लिया। वर्धा जिले में ग्रामदान-आंदोलन, परस्पर-परिचय और जीवन का सर्वांगीण दर्शन कार्यकर्ताओं को हो, इस उद्देश्य से शिविर का आयोजन किया गया था। रोज दो घंटा शरीर-श्रम, ग्रामसफाई, खेती में काम करना, रसोई में मदद, बर्तन माँजना, आदि विविध कार्य होते थे। सुबह-शाम ढाई-ढाई घंटा बौद्धिक वर्ग चलते थे। बौद्धिक वर्ग के पहले हर कार्यकर्ता अपना विस्तृत जीवन-परिचय देता था। विभिन्न विषयों पर अनुभवी जनों के भाषण भी हुए। शिविर की समाप्ति श्री आर्यनायकमजी द्वारा सेवाग्राम में हुई। बापूकुटी के सामने प्रार्थना और सामुदायिक कताई हुई। शिविर के लिए देहातों से अनाज एकत्रित किया गया था।

शिविर के दिनों में ही आर्वी तालुका के दो गाँवों के लोगों ने ग्रामदान की घोषणा की।

वर्धा जिले के तीनों तालुकों में १२ टोलियों द्वारा पदयात्रा करने की योजना बनी। हर तालुके में २५-३० गाँव चुन कर ग्रामदान का प्रयत्न कार्यकर्ता करेंगे।

—वसंत वोंबटकर

---

www.vinoba.in

अब हमारा सुख-दुःख एक है !

(रामावतार)

आज मानव प्रतिद्वंद्विता और हिंसा से मुक्ति पाने के लिए अत्यंत व्याकुल है। इसी सुप्त भावना के परिणामस्वरूप भारत में ग्रामदान और ग्रामराज का स्वागत जनता हृदय से कर रही है, क्योंकि वह अपने दुःखों का हल ढूँढ़ रही है। वस्तुतः आज की युग-समस्या नैतिक समस्या ही है। जब तक हम मनुष्य को मनुष्य नहीं समझते, तब तक हमारे जीवन से कलह और द्वेष का विकार मिट नहीं सकता। ग्रामराज ही इसका उपाय है, क्योंकि इसमें निजी संपत्ति और सत्ता का विसर्जन होता है और परस्पर के सच्चे सुख और दुःख की सहज अनुभूति जनता को होती है। ग्रामदान व ग्रामराज के समारोहों में तो इसका दर्शन सहज होता रहता है !

मगध की भूमि अपनी क्रांतिकारी भावना के लिए इतिहास-प्रसिद्ध है। यहाँ पुरोहितवाद और कर्मकांड के खिलाफ बुद्ध और महावीर की क्रांति हुई और गांधी-युग में चम्पारन की असहयोग क्रांति ! विनोबाजी ने भी मगध भूमि को क्रांति के फैलाव के लिए प्राथमिकता दी और गया में भूदान-आन्दोलन के संचालन के लिए अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का दफ्तर भी रखा। बिहार ने हृदय की जिस विशालता के साथ जमीन का दान किया, उसी विशालता के साथ वह ग्रामदान भी कर रहा है। अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ के प्रधान-केन्द्र श्रम-भारती, खादीग्राम के आसपास इस ग्रामदान-कुम्भ का पूर्ण दर्शन हो रहा है, क्योंकि श्री धीरेन्द्र भाई के मार्गदर्शन में यह संस्था आज पाँच वर्षों से शोषण से श्रेणियों से और शासन से मुक्त समाज की स्थापना के प्रयोग कर रही है और क्रांति की बुनियाद कायम कर रही है। उसकी अनोखी सफलता और कार्य-शैली से आस-पास के गाँवों में निष्ठा और विश्वास जम गया है और आज वे इस तरह के समाज को बनाने में तैयार हो गये हैं। इसी कारण फरवरी '५७ से आज तक पाँच गाँवों ने अपने यहाँ ग्रामराज की स्थापना का संकल्प करके अपनी सारी मालकियत ही विसर्जित कर दी है।

२१ जून शुक्रवार के पुण्य दिवस पर लभेत गाँव के निवासियों ने ग्रामराज का संकल्प-समारोह किया। खादीग्राम-परिवार ने उनके इस संकल्प का हृदय से स्वागत किया। गाँव की ओर से श्री शत्रुहन सिंहजी ने कहा कि "जैसे मरा हुआ मुर्दा घर में ज्यादा दिन पड़ा रहने से उससे बदबू निकलने लगती है और कुत्ते तथा गिद्ध भी अपनी चोंचें लगाते हैं, उसी तरह हमने पुरानी मालकियत तो समाप्त कर दी थी, पर उसके विसर्जन के संस्कार में देर होने से यहाँ के वातावरण में थोड़ी अशुद्धि आ गयी थी। पर हम गाँववालों ने अब ग्रामराज के हर पहलू पर गौर किया है और समझ-बूझ कर हम ग्रामराज की स्थापना का संकल्प कर रहे हैं।" उन्होंने यह भी संकल्प किया कि "शादी और श्राद्ध जैसे सुख-दुःख के काम एकसाथ मिल कर ही झेलेंगे। आज हमारे गाँव में इसी तरह एक सामूहिक शादी सम्पन्न भी हुई है।"

सभापति के पद पर आसीन एक जर्जर अर्ध-वसनधारी बूढ़ा बैठा था, जिसके मुंह पर सदियों की गुलामी के चिह्न परिलक्षित हो रहे थे। परन्तु जिस प्रकार पिंजड़े से मुक्त पक्षी की हालत होती है, वही हालत इन ग्रामीणों की थी। सभी की आवाज में एक अपूर्व तेज, शक्ति और ओज दिखायी पड़ रहा था। उन्होंने आगे कहा : "इसमें कोई संदेह नहीं कि भूमि पर से स्वामित्व-विसर्जन इस आन्दोलन में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है, लेकिन ग्रामराज का श्रीगणेश तो वहीं से हो जाता है, जहाँ गाँव के सभी लोग बैठ कर गाँव की समस्याओं का हल सामूहिक रूप से सोचते हैं। इतने अंश में तो हमारे गाँव के सभी परिवार शामिल हैं। परन्तु हमें विश्वास है कि जल्द ही वह समय आने वाला है, जब वे लोग भी इस ग्रामराज में पूर्ण रूप से सम्मिलित होंगे।"

रिपोर्ट में गाँव के बारे में कहा गया है कि "इस ग्रामराज में सम्मिलित होने वाले ५५ परिवारों में कुल ३० एकड़ भूमि है। इन ३० एकड़ों में २० एकड़ जमीन, सम्मिलित होने वाले परिवारों में से केवल १० की थी। इतनी कम भूमि इतने ज्यादे परिवारों में बांटने से कोई लाभ नहीं था। अतः ग्रामराज-समिति ने यह निर्णय किया है कि इस भूमि के साथ जितने मालिकों और मजदूरों का सीधा सम्बन्ध था, उनमें यह जमीन बांट दी जायगी। पर आज से उस भूमि का न तो कोई मालिक होगा और न मजदूर। सभी उसके सेवक होंगे। यह व्यवस्था इस गाँव और पड़ोस के लिए एक नमूना होगी ! हम दावे के साथ कह सकते हैं कि आज के जमाने की जो मांग है, उसका एकमात्र हल यही है। जो इस ग्रामराज में समझ-बूझ कर शामिल होगा, शांति की ही स्थापना करेगा।"

श्री धीरेन्द्र भाई ने शपथ-ग्रहण-समारोह के अवसर पर लभेत-निवासियों का अभिनन्दन करते हुए कहा कि "आप लोगों को शपथ लेने में देरी हुई, हालाँकि आप ग्रामराज का निर्णय बहुत पहले से कर चुके थे। मैं भगवान् से ऐसी प्रार्थना भी करता था कि आप लोग इसका निर्णय समझ-बूझ कर करें, क्योंकि आपका गाँव अन्य ग्रामदानी गाँवों से भिन्न है। यहाँ भिन्न प्रकार की जातियाँ, बिरादरी तथा आर्थिक असमानता के आधार पर लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की अवस्था में अपना जीवन-यापन भी करते हैं। आज की सबसे बड़ी समस्या सुरक्षा की है। आज के युग में धनी और गरीब, मालिक और मजदूर, बुद्धिजीवी और श्रम-जीवी, सबके सब इसके लिए परेशान हैं। इस परेशानी का कारण यह भी है कि आज व्यक्ति की सुरक्षा अकेले नहीं हो सकती। सभी का दम घुट रहा है। अतः आज का समाधान, सब मिलजुल कर उत्पादन करें और एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल हों, यही है। आप लोगों ने जो निर्णय लिया है, इससे अपना ही नहीं, समाज और दुनिया का भी हित होगा। हमें खुशी है कि इस गाँव में आज की शादी में इस गाँव के सभी लोगों ने अपनी कन्या समझ कर उनके इस अनुष्ठान में योग-दान दिया। यह जान कर मैं आत्म-विभोर हो गया हूँ कि आसपास के सभी ग्रामदानी गाँवों ने यथा-शक्ति इस विवाह-अनुष्ठान में अपना हिस्सा बंटाया है। जब मनुष्य एक-दूसरे के 'चिर हास अश्रुमय आनन' में अपने को एकात्म कर देगा, तब फिर दुनिया की सारी समस्या का समाधान आप से आप हो जायगा।"

अपने भाषण का उपसंहार करते हुए उन्होंने कहा कि "इसमें विवाहोत्सव के अवसर पर जो अतिथि आये हुए हैं, उन्हें भी यहाँ से इस कन्या के साथ यहाँ की संस्कृति और परम्परागत संस्कार तथा विचार को ले जाना चाहिए। उन्हें भी इस गाँव के विचार को समझ कर अपने यहाँ ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए। मानव केवल खाने को ही जिन्दा नहीं रहता है। उसे शारीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास भी चाहिए। आज हमारी संस्कृति विकृत हो गयी है। गुलामी के कारण उसके गुण लुप्तप्राय हो गये हैं। प्रत्येक ग्रामदानी गाँव को अपने सांस्कृतिक विकास के लिए अपने बच्चे को नयी तालीम देनी चाहिए। आप जानते हैं कि भारत की नारी के कंठ-निनाद और मंगल गान से भारत का आकाश स्वरनिनादित रहता था। परन्तु वह आज हमें खोजे नहीं मिल पाता।"

अन्त में "बिनु श्रम खाये चोर कहाये, नवयुग की आवाज है। न यह मेरा, न यह तेरा, ईश्वर का यह राज है।" के गान के साथ यह समारोह समाप्त हुआ।

पावन प्रसंग

शहरों की चकमक से दूर, बहुत दूर के एक गाँव, कुमारडीह में हमें जाना था। हमारे साथ महिला चरखा-समिति, पटना की लगभग बीस बहनें, श्री विद्या बहन, श्री मनोरमा बहन थीं एवं श्री साकेत भाई भी थे। यह इलाका भागलपुर जिले का है। क्रान्ति-वर्ष '५७ की पृष्ठभूमि में भूक्रांति का संदेश लेकर यह टोली एक माह से घूम रही थी। कुमारडीह गाँव पिछड़ा, निरक्षर और अजाग्रत है।

गाँव के निकट भी नहीं पहुँचे थे कि ढोल की डिग-डिग और तुरही की पीं-पीं सुनायी पड़ी। बड़ी भीड़ आ रही थी। हम यह राज़ समझ नहीं पा रहे थे कि कहाँ और किसलिए यह भीड़ जा रही है, जब कि हम तो उनके गाँव पहुँच रहे हैं। अब हम भीड़ के निकट पहुँच चुके थे। पर वह तो महिलाओं का एक गिरोह था ! एक ने आवाज लगायी–'महात्मा गांधी की जय !' 'संत विनोबा की जय।' थाल में आरती और कलश में गंगाजल लेकर वे स्वागत करने आयी थीं। अब यह राज़ हम समझे ! एक पिछड़े गाँव की ओर से ऐसा स्वागत ! और वह भी महिलाओं द्वारा ! लेकिन कुमारडीह की महिलाओं ने असंभव को संभव कर दिया। उन्होंने हमारी आरती उतारी, हमारे ऊपर गंगाजल छिड़का और हमारे साथ की बहनों से जी भर-भर कर गले मिलीं। एक अभूतपूर्व दृश्य था। वे स्वागत-गीत गा रही थीं। हम गाँव में पहुँचे। फिर टोली की बहनें गाँवों का चक्कर लगाने के लिए निकल पड़ीं। लगभग ४ बजे सूत्रयज्ञ का आयोजन हुआ। गाँव की बहनों ने भी कताई-यज्ञ में भाग लिया। कताई के साथ-साथ कताई के गीतों से एक अभूतपूर्व मधुर वातावरण की सृष्टि हो गयी थी। शाम को सभा में वक्ताओं ने भूदान के लिए ग्राम का आवाहन किया। टोली की बहनों ने गाँव की बहनों के द्वारा गाँव के ही हृदय को जीत लिया था। **यह गाँव ग्रामदान में आगे रहेगा, ऐसा विश्वास लेकर और साथ में दक्षिणा-रूप भूदान लेकर हम आगे की ओर चल पड़े।**

—धर्मवीर प्रसाद सिंह

---

www.vinoba.in

ग्रामदानी-गाँव वाई : नवनिर्माण के पथ पर

बंबई-राज्य के विदर्भ क्षेत्र में मोर्शी तालुका (अमरावती जिला) के 'वाई' ग्राम ने ३० जनवरी '५७ को ग्रामदान करके ग्रामराज्य-निर्मिति का संकल्प किया। श्री जयप्रकाशजी ने शुभाशीर्वाद दिया। वाई की लोकसंख्या ३९५ है, जिसमें ३३० आदिवासी हैं। ग्रामराज्य के संकल्प में शामिल न होने वालों की ६० एकड़ जमीन छोड़ कर ५५० एकड़ की सामुदायिक खेती ही करने का निर्णय गाँव वालों ने लिया। प्रांत के भूतपूर्व विकास-मंत्री श्री रा. कृ. पाटील के मार्गदर्शन में इसकी योजना बनी और उसके अनुसार १०० एकड़ में मूंगफली, ५० एकड़ में कपास, २० एकड़ में वरू, १६ एकड़ में तिलहन, १० एकड़ में मिर्च और बगीचा तथा ३५० एकड़ में ज्वार की खेती करने का तय हुआ है। एक नया कुँआ खोदा गया है और लगभग एक हजार रुपयों का कोयला भी तैयार किया गया। नये ग्राम-उद्योग खड़े करके गाँव को अन्न-वस्त्र की दृष्टि से स्वावलंबी बनाने का संकल्प गाँववालों ने किया है। ग्रामदान के संकल्प के साथ शराब छोड़ने की शपथ भी ली गयी और लोग व्यसन-मुक्त हुए। विनोबाजी की कल्पना के अनुसार इस वर्ष दो शादियाँ गाँव में हुईं। सामुदायिक रूप से पत्र द्वारा उनके आशीर्वचन भी प्राप्त हुए। छोटे-बड़े सभी गाँव के कल्याण-कार्य में उत्साह से संघटित होकर जुट गये हैं। इसका असर आस-पास के गाँवों पर भी हो रहा है और कई गाँव के लोग ग्रामदान का विचार समझना चाह रहे हैं। इस वातावरण को गति देने की दृष्टि से नागविदर्भ और बैतुल-छिंदवाड़ा के कार्यकर्ता आसपास के लगभग १२५ गाँवों में पदयात्रा कर रहे हैं।

(मराठी 'साम्ययोग' से) —डॉ० अमर मोरे

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

आंध्र-समाचार :

ता० २४-६ से ३०-६ तक भीमावरम् में आंध्र प्रादेशिक ग्रामराज-ट्रेनिंग-शिविर हुआ। श्री प्रभाकरजी ने उद्घाटन किया। यह शिविर गत अप्रैल में श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में पटामटा में शुरू हुई ग्रामराज-सभाओं का एक अंग था। अपनी आंध्र-यात्रा में जयप्रकाशजी ने इस बात पर जोर दिया था कि राजनीतिक-आर्थिक समस्याओं के साथ ग्रामराज का संबंध जोड़ दें।

'ग्रामराज्य' क्या, क्यों और कैसे स्थापित होगा, इसके बारे में श्री गोराजी ने व्याख्यान दिये। तेरह जिलों से ३४ शिविरार्थी आये थे। श्री वल्लभस्वामीजी ने मार्गदर्शन किया। विनोबाजी ने संदेश भेजा कि "ग्रामराज के आंदोलन में आगे बढ़ें। कड़प्पा में ग्रामदान प्राप्त करें और महबूबनगर जिले में छठा हिस्सा प्राप्त करें।"

अगस्त में गुंटुर, प० गोदावरी और नरगुंदा जिले में शिविर होंगे। महिला-शिविर अक्तूबर में होगा। —लवणम्

बिहार : श्रमभारती, खादीग्राम के आचार्य श्री राममूर्तिजी की पदयात्रा मुंगेर जिले में लखीसराय के इर्दगिर्द जुलाई महीने तक चलेगी। पदयात्रा में बिहार के वर्षदानी विद्यार्थी एवं जिला-निवेदक भी शामिल होंगे। एक टोली पंद्रह दिन तक उनके साथ रहेगी। अभी उनके साथ १२ वर्षदानी विद्यार्थी हैं। देहात और शहर का कार्यक्रम सम्मिलित रहेगा।

—ता. १३ जून को गया जिले के कौआकोल थाने के १८ गाँवों में ३१९ आदाताओं के बीच ५५७ एकड़ भूमि वितरित की गयी। उसके प्रमाण-पत्र कौआकोल में श्री जयप्रकाशजी द्वारा ससमारोह वितरित किये गये। इनमें दो ग्रामदानी गाँव भी थे। इस अवसर पर वारसलीगंज थाने के प्रमुख भूदान-कार्यकर्ता श्री श्रीपति पांडे द्वारा उस थाने के चंडीनामा तथा नूरीचक नामक दो गाँवों द्वारा सर्वसंमति से वस्त्रस्वावलंबन के ग्रामसंकल्प किये गये।

प्रमाण-पत्र वितरण-समारोह के समय माध्यमिक विद्यालय कौआकोल, उच्च विद्यालय उखड़िका के छात्रों को नाटकों के सफल अभिनय पर तथा दरबाँ, बाजितपुर और भोरमवाग गाँव की संकीर्तन-मंडलियों की संकीर्तन-प्रतियोगिता के पुरस्कार भी श्री जयप्रकाशजी द्वारा वितरित किये गये।

—अखिल भारत पदयात्री-दल ने २ जुलाई तक ५५०० मील की पदयात्रा की। अब तक भूदान में २२ गाँव और २१ लाख एकड़ भूमि तथा ४ लाख रुपया संपत्तिदान में प्राप्त हो चुका है। उत्तर प्रदेश में अब तक ३०० बीघा भूमिदान मिला। यह पदयात्री दल २ फरवरी '५६ को कन्याकुमारी से निकला था और २ अक्तूबर '५७ को वर्धा में पदयात्रा की समाप्ति होगी। बाराबंकी जिले में २८ जून से २ जुलाई तक १० गाँवों में ५० मील की यात्रा करके भूदान-प्रचार किया। ४ बीघा भूदान तथा दो जीवनदानी प्राप्त हुए।

उत्तर प्रदेश : बाराबंकी जिले के सर्वोदय-समाज की ओर से जून माह में कुल ३७४ मील की यात्रा द्वारा ३२ गाँवों में भूदान-प्रचार किया गया। करीब २७ बीघा भूमि मिली, ५१ बीघा भूमि का वितरण किया। सहायता-दान में ३१) मिले। २ समयदानी प्राप्त हुए।

—फर्रुखाबाद, जिले के ४० कार्यकर्ताओं का सर्वोदय-शिक्षण-शिविर श्री सूर्य-सहाय दीक्षित की अध्यक्षता में तारीख २१ से ३० जून को ग्राम मोहम्दाबाद में हुआ। सर्वश्री कपिलभाई व स्वामी विपदानन्दजी के प्रवचन हुए। २४ जून को स्वामी विपदानन्दजी के नायकत्व में आठ शिक्षार्थियों की टोली पदयात्रा के लिए निकली।

—सर्वोदय-समाज ठेकमाँ (आजमगढ) के गोस्वामी मेवालालजी आजमगढ (लालगंज) के गाँव-गाँव में पदयात्रा करके सर्वोदय-साहित्य द्वारा विचार-प्रचार कर रहे हैं। आपने कई स्थानों पर 'सर्वोदय-कुटी' की स्थापना भी की है।

—२०-२१ जून को नाग-विदर्भ क्षेत्र के आठ जिलों के लोकसेवकों तथा प्रमुख भूदान-कार्यकर्ताओं का शिविर धामणगाँव में हुआ। शिविर में सन् '५७ के कार्य की चर्चा हुई और कार्यक्रम तय हुआ। फिलहाल ग्रामदान-आंदोलन की पूर्वतैयारी चल रही है। अमरावती जिले के ग्रामदानी गाँव, वाई से ग्रामदान-प्रचार शुरू किया जायेगा। १० से ३० जुलाई तक वाई के इर्दगिर्द के १२५ गाँवों में से विशाल पदयात्रा होगी। प्रारंभ में, मध्य में और अंत में, ऐसे तीन शिविर होंगे। मुलताई-तहसील के नरखेड ग्राम में श्री रा० कृ० पाटील द्वारा पदयात्रा-समाप्ति-समारोह होगा।

—नाग-विदर्भ के आठ जिलों से मई के अंत तक कुल १७,४५८ दाताओं द्वारा ८५,२६५ एकड़ भूमिदान मिला, जिसमें से ५,७३६ परिवारों में ३८,२२० एकड़ भूमि वितरित की गयी है।

—मध्यप्रदेश की मुलताई तहसील के चार गाँवों में ग्रामदान की दृष्टि से प्रचार हुआ। ये जिले के जाग्रत गाँव हैं और ग्रामदान का विचार उन्हें जँच गया है। ग्राम-पंचायत, जनपद और लोकसभा के चुनावों के कारण ये गाँव छिन्न-भिन्न हो गये हैं।

—महाकोशल के १७ जिलों में जून माह में करीब ५०६४ एकड़ भूमि १६६५ दाताओं से प्राप्त हुई। ४१ आदाताओं में २२८ एकड़ भूमि का वितरण हुआ। ३० जून तक महाकोशल में कुल ४२,४६६ दाताओं द्वारा करीब १,१०,८१० एकड़ भूमिदान मिला और ६,४१९ आदाताओं में २६,९५२ एकड़ भूमि वितरित की गयी।

—कालड़ी-संमेलन के बाद श्री शंकर पाटील के साथ निकली हुई भूदान-पदयात्री टोली की ४५० मील की यात्रा हुई। मैसूर शहर के हाईस्कूल के १५०० छात्र और शिक्षकों ने संपत्तिदान-पत्र भर कर दिये। छात्रों ने अपने खर्च का १६ वाँ हिस्सा संपत्तिदान में देने का तय किया। मैसूर के कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट कार्यकर्ताओं ने संपत्तिदान-पत्र भर कर भूदान-कार्य करने का संकल्प भी किया।

—सितंबर में मैसूर में ग्रामदान-आंदोलन के संबंध में जो सार्वदेशिक और सर्वपक्षीय सभा विनोबाजी की उपस्थिति में होने जा रही है, उसका निमंत्रण अधिकृत रूप से प्रजासोशलिस्ट पार्टी ने स्वीकार कर लिया है, ऐसी दिल्ली की खबर है।

उड़ीसा : कोरापुट जिले में अब तक कुल २,०३,०० एकड़ वाले १४०० देहातों ने ग्रामदान जाहिर किया है। ६०० देहातों में ७८,८१२ व्यक्तियों के १२,२९३ परिवारों में, २३०० एकड़ भूमि 'कम्यूनिटी फार्मिंग' (सामूहिक खेती) के लिए रख कर शेष ८९,८३९ एकड़ भूमि वितरित की गयी है।

ग्रामदान की खबरें भेजें

जिला-निवेदकों, भूदान-कार्यकर्ताओं एवं प्रादेशिक भूदान प्रकाशन-समितियों से हमारी विनय है कि अपने क्षेत्र में ग्रामदान होते ही तुरंत उसकी सूचना हमें भेजें, ताकि "भूदान-यज्ञ" में हम वह प्रकाशित कर सकें।

तार या पत्र से मंगलवार सबेरे तक भी अगर हमारे पास ग्रामदान-प्राप्ति की सूचना आती है, तो उसी अंक में वह जा सकती है। अधिक विस्तृत समाचार अगले अंक में जा सकते हैं। ग्रामदान में मिले हुए गाँवों का विवरण पूरा रहे, जिसमें एकड़, भूस्वामी, भूमिहीन, गाँव के कुल परिवार आदि जानकारी भी हो। प्राप्त ग्रामदान का मासिक लेखा भी भेजा जाय। —संपादक

---

www.vinoba.in

ग्रामदान की गंगा में–

—वर्धा जिले के आर्वी तालुके में चौथा ग्रामदान 'गोदरी' मिला।

—बंबई राज्य के पश्चिम खानदेश जिले के अक्कलकुआ तालुके में २५ ग्रामदान मिले हैं।

—गुजरात में अभी तक कुल १२ ग्रामदान हुए हैं, जिनमें ८ बडोदा जिले के हैं। इसके अलावा बड़ोदा जिले के दो गाँवों के कई ग्रामीणों ने ग्रामसमर्पण का संकल्प किया है बड़ोदा जिले के नसवाडी तहसील में 'जजवा' नामक और एक गाँव ग्रामदान में मिला।

अभी तक केरल में कुल ५३ ग्रामदान मिले हैं।

—बंबई प्रदेश के रत्नागिरि जिले में कुल ७९ ग्रामदान मिले। महाराष्ट्र के कुल ग्रामदानी गाँव २२७ हुए हैं। कई गाँवों में वितरण के साथ-साथ पुनर्निर्माण के काम भी हो रहे हैं।

अखिल भारतीय कार्यकर्ता-संमेलन

कालड़ी-सम्मेलन में यह तय हुआ था कि देश भर के निवेदकों तथा प्रमुख कार्यकर्ताओं को भूदान-कार्य के बारे में विनोबाजी से मार्गदर्शन मिल सके तथा वे आपस में विचार-विनिमय कर सकें, इस दृष्टि से वर्ष में एक-दो बार विनोबाजी की उपस्थिति में शिविर किया जाय। तदनुसार यह तय हुआ है कि ता. २५ से २७ सितम्बर तक शिविर किया जाय। स्थान मैसूर के आसपास होगा। कोशिश की जा रही है कि इस शिविर में जाने वालों को आधे रेल-किराये की सुविधा मिल सके, पर रेल-किराये की व्यवस्था शिविर में सम्मिलित होने वालों को ही करनी होगी। भोजन का प्रबन्ध शिविर में निःशुल्क रहेगा। अन्य तफसील बाद में प्रकाशित होगी। शिविर में चर्चा के लिए कोई कुछ सुझाना चाहें, तो कृपया शीघ्र सुझायें।

अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, खादीग्राम, मुंगेर —सिद्धराज ढड्ढा, सहमंत्री

पू० विनोबाजी का स्वास्थ्य

कालीकत से ता. १३ जुलाई को श्री वल्लभस्वामीजी से फोन से जो समाचार मिले, वे इस प्रकार हैं :

विनोबाजी को जब बुखार आया, तो ऐसा लगा, यह वही बुखार है, जिसने चांडिल आदि जगह पीछा पकड़ा था! लेकिन बाद में तो 'फ्लू' का ही यह आक्रमण था, यह स्पष्ट हो गया। जून की ता० २८ को उनका गला ज्यादा खराब हो गया था, जो ता० ३ तक चला। ता० ३ को बुखार तो था ही, खाँसी से नींद भी नहीं आयी। फिर भी कमजोरी बहुत लगती थी। ता० ४ को वे चले! शाम तक बुखार १०२°४' तक पहुँच गया। अंततः अगले दिन अगले पड़ाव, निलांबर पर मोटर से गये। ता० ५-६ को वही हालत रही। ता० ७ को बुखार ९८' हुआ। ता० ८ को भी बुखार रहा। इन दिनों मोटर में यात्रा बराबर जारी रही। ता० १० को फिर वे १० फर्लांग चले एवं ता० ११ को ४ मील। इन दिनों (ता० ११ से १४ तक) कालीकट में निवास है और कार्यक्रम बराबर चल रहे हैं। ता० १५ से फिर पदयात्रा शुरू होगी। एक सप्ताह तक ४-५ मील से ज्यादा फासला नहीं रहेगा।

—

—सरहद्द गांधी श्री खान अब्दुल गफ्फर खान ने पाकिस्तान में भूदान-आंदोलन के ढंग पर ही एक आंदोलन चलाने का जाहिर किया है।

—

हिंदुस्तानी तालीमी-संघ के नये पदाधिकारी :

अध्यक्ष-श्री इ० डब्ल्यू० आर्यनायकम्, उपाध्यक्ष-श्रीमती आशादेवी आर्यनायकम् और श्री मार्जरी साइक्स, मंत्री-श्री राधाकृष्णन् और श्री अरुणाचलम्, कोषाध्यक्ष-श्री श्रीमन्नारायणजी। पुराने अध्यक्ष श्री काकासाहब कालेलकरजी ने छह साल तक बहुत ही अच्छी तरह से अध्यक्षपद संभाला और अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन सबको देते रहे, इसलिए संघ ने उन्हें धन्यवाद दिया। नयी तालीमी-संघ का ग्यारहवाँ अधिवेशन बिहार में 'तुर्की' में होगा।

साहित्य-परिचय

उपवास, ले० ज्योतिर्मयी ठाकुर, प्र० छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग। पृष्ठ १८३, मूल्य २)

प्रस्तुत पुस्तक में उपवास का शास्त्रीय और व्यावहारिक दृष्टि से विवेचन किया गया है और विभिन्न रोगों में सफलतापूर्वक उपवास-चिकित्सा को सफलतापूर्वक आजमाया भी गया है। पुस्तक उपवास-शास्त्र की अच्छी समीक्षा प्रस्तुत करती है।

रिफ्लेक्शन्स ऑन भारत (अंग्रेजी), ले० प्र० एस. सुब्रमन्य अय्यर, "कॉलेज कॅन्टीन", मदनपल्ली, आंध्र। पृष्ठ २५, मूल्य ।।।)

काव्यमय भाषा में भारत-भूमि की सेवा में लेखक का निवेदन, जिसमें भारत की महत्ता की वर्णन-गाथा है।

संपत्तिदान-यज्ञ (सिंधी) मूल ले० श्रीकृष्णदास जाजू, अनुवादक-तोताराम वलेचा, प्र० लोक साहित्य-प्रकाशन, गांधीधाम, जेड, १३, आदिपुर (कच्छ) पृष्ठ २६, मूल्य =)

स्व० जाजूजी की मूल हिंदी पुस्तक का सिंधी भाषा में अनुवाद है, जिसमें संपत्ति-दान संबंधी विचार संकलित हैं।

धरती के गीत (सिंधी) ले० कवि दुखायल, प्र० उपर्युक्त, पृष्ठ २०, मूल्य =)

श्री दुखायल कवि इस भूदान-क्रांति में अपना युगधर्म जिस खूबी से निभा रहे हैं, वह उनके कवि-कुल की महिमा के अनुकूल ही है। प्रस्तुत पुस्तक इसीका एक छोटा-सा नमूना है।

—

प्रकाशन समाचार

नये अंकुर : श्रीराम चिंचलीकर पृष्ठ ४४, मूल्य ।)

इसकी भूमिका में पू० दादा लिखते हैं : "इस नन्हीं-सी पुस्तिका में छोटी-छोटी घटनाओं का हृदयस्पर्शी वर्णन है। हममें से बहुतों को अपने दैनिक जीवन में ऐसे अनुभव आते रहते हैं, पर उनकी प्रतिध्वनि शायद ही कभी हमारे अन्तस् में गूँज पाती है। हमारा मन कितना रूखा और नीरस हो गया है! जिसके अन्तस् में सदा-सर्वदा क्रान्ति की आकांक्षा जागती है, उसे एक विशेष प्रकार की दृष्टि प्राप्त हो जाती है। उसे दीखता है कि समाज में क्रान्ति के बीज कहाँ अंकुरित हो रहे हैं। श्रीराम की इस पुस्तिका में पाठक इस दृष्टि का अनुभव करेंगे।"

—अ. भा. सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

—

श्री विनोबाजी का और श्री वल्लभस्वामीजी का डाक-तार का पता :
मार्फत : सर्व-सेवा-संघ, पो० परली PARLI (PALGHAT : KERAL)

विषय-सूची

१. भूदान और सरकारी तरीके का अंतर	विनोबा	१
२. मातृभाषा-राष्ट्रभाषा और एक लिपि	,,	२
३. मानव-मानव के बीच की संयोग-स्थली!	,,	३
४. विनोबा-प्रश्नोत्तरी	,,	३
५. संपत्ति-दान का उद्देश्य और विनिमय	जयप्रकाश नारायण	४
६. बिहार खादी-ग्रामोद्योग-संघ का प्रस्ताव	—	५
७. उड़ीसा सरकार से!	—	५
८. बल कैसे बढ़ता है?	विनोबा	६
९. सर्वोदय की दृष्टि : राष्ट्रों की भूख-हड़ताल!	काका कालेलकर	६
१०. संविभाग और सज्जनता की राह	दादा धर्माधिकारी	६
११. सर्वोदय-क्रांति प्रगति-पथ पर है या पीछे हट रही है?	धीरेन्द्र मजूमदार	७
१२. सर्वोदय में सबको लीन होना है!	विनोबा	७
१३. तमिलनाड़ की चिट्ठी	एस. जगन्नाथन्	८
१४. इलाहाबाद जिले का एक अनोखा शिविर!	सुरेश रामभाई	८
१५. बाबा राघवदासजी की पावन यात्रा से	महेन्द्र कुमार	९
१६. अब हमारा सुख-दुख एक है!	रामावतार	१०
१७. पावन-प्रसंग	धर्मवीर प्रसाद सिंह	१०
१८. ग्रामदानी गाँव 'वाई' : निर्माण के पथ पर	डा० अमर मोरे	११
१९. आंदोलन के बढ़ते चरण, सूचनाएँ, साहित्य-परिचय	—	११-१२

सिद्धराज ढड्ढा, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव-भूषण-प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी, टे० नं० १२८५

www.vinoba.in